

‘कोई आण मिलावे मेरा प्रीतम प्यारा’

~~वचन सत्संग सन्त कृपालसिंह जी महाराज~~

(सत्संदेश जुलाई 1959 में प्रकाशित प्रवचन)

गुरु की महिला सब ऋषियों, मुनियों, महात्माओं ने वेदों-शास्त्रों पोथियों में गाई। गुरु को कोई गुरु ही जाने।

वली रा वली भी शनासद।

वह (गुरु) भी हमारी ही तरह जिस्म रखता है, मगर उस जिस्मानी पोल पर उसमें वह भूला हुआ नहीं, लम्पट नहीं। वह यह देखता है कि यह शरीर एक Tool है (ओज़ार है) काम करने के लिये। परमात्मा घट-घट में है, कोई हृदय उससे खाली नहीं है। एक ही सेज पर आत्मा और परमात्मा विराजमान हैं। आम लोगों की हालत क्या है, कि उनकी आत्मा मन के अधीन होकर इन्द्रियों के घाट पर बाहर फैलाव में जा रही है, अपने आपकी, तरफ से बेसुध और बेखबर है। Overself अर्थात् परमात्मा जो है, उसका कुछ पता ही नहीं। अपना ही पता नहीं तो परमात्मा का क्या पता हो? गुरु भी हमारी तरह जिस्म रखता है, मगर उसको यह पता है कि मैं आत्मा हूं। उसका Contact (सम्पर्क) Overself (प्रभु) से है। वह जब लय होता है तो Mouthpiece of God वन जाता है (अर्थात् प्रभु उसमें बोलता है)।

गुफताये ऊ गुफताये अल्लाह बवद।

गरचे अज हलकूमे अब्दुल्लाह बवद॥

अर्थात् उसका कहा हुआ परमात्मा का कहा हुआ है चाहे देखने में वह इन्सानी गले से आवाज निकलती मालूम होती है।

जैसे मैं आवे खसम की बाणी तैसड़ा करि ज्ञान वे लालो॥

वह मन बुद्धि के घाट पर नहीं है। वह जैसे अन्तर से अनुभव आ रहा है न, धारा आ रही है, वैसा वह कहता चलता जाता है बगैर सोचे और समझे। उसको यह भी नहीं पता कि आगे मैंने क्या कहना है। समझे!

नानक दास बुलाया बोले।

मगर जो ख्यालात, एमरसन कहते हैं, बगैर सोचे समझे के अन्तर से आ रहे हैं न, They are always perfect (वे हमेशा ठीक होते हैं), वह Cut

and dried (जचे-तुले) आते हैं। बुद्धि के घाट पर जो इन्सान बोलता है वह सोचता है, अब मैंने यह कहा, अब मैंने यह कहना है। उसे (मन-बुद्धि के घाट पर बात करने वाले को) टैक्ट रहता है (दिमाग पर बोझ रहता है)। यहां Taxation (सोच विचार का बोझ) कोई नहीं। वह (अनुभवी पुरुष) कहता चला जाता है। वह उस अनुभव को पा रहा है। वैसा ही सामान हमारे हृदय में भी है मगर वह सेट नहीं हुआ। हम Intuned नहीं (अन्तर्मुख जुड़े नहीं) बाहरी फैलाव में होने के कारण। न अपने आप की सूझत है, न प्रभु की सूझत है।

एका सेज सुत्ती धन कन्ता। | धन सुत्ती पिर सद जागंता॥

एक ही सेज पर आत्मा और परमात्मा सो रहे हैं। आत्मा इन्द्रियों के फैलाव में होते हुये अन्तर से सो रही है। यह भी पता नहीं कि प्रभु मेरे अंग-संग है, और वह पति परमात्मा इन्तजार में है कि कब इस का मुह मेरी तरफ होता है-

सबो घट मेरे साईयाँ सुत्री सेज न कोय। |

बलिहारी तिस घट के जा घट परगट होय॥

सब घटों में वह विराजमान है, कोई ऐसा घट नहीं जिसमें वह न हो। जिसमें वह प्रकट हो चुका है न, वह बलिहार जाने के (योग्य) है, जो Intuned है (उसमें अभेद है) Connected है (जो अन्तर से प्रभु से जुड़ा हुआ है), वह अन्तर से जाग रहा है। वह Conscious Co-Worker of the Divine Plan (वह परमात्मा से अभेद है) वह देख रहा है, वह कर रहा है, मैं नहीं कर रहा। मैं तो केवल एक कठपुतली हूँ उसके हाथ में। वह जैसा नाच नचाये मैं काम कर रहा हूँ। उसकी अपनी will (इच्छा)को दखल नहीं है। उसकी सोहबत में जायें तो हमें भी वह सिखलाता है कि हम कैसे जिस्म जिस्मानियत से ऊपर आ सकते हैं? उसकी (प्रभु की) Will (इच्छा) के साथ कैसे Intune (अभेद) हो सकते हैं। उसकी (अनुभवी पुरुष की) आत्मा पिण्ड को छोड़कर दिव्य मंडलों में सफर करती है। हम सब जिस्म के घाट पर हैं। एक एम. ए. पास है, एक आदमी अभी पहली में पढ़ रहा है। दोनों हैं तो इन्सान ही न। उनकी काबिलियत में फर्क है। जब हमने कोई Higher(ऊंची) चीज सीखनी हो, पढ़ता हो, तो कुदरती बात है वह उनके पास

बैठे जो पढ़ चुके हैं, जो माहिर हैं। जिन्होंने B.T. (बी.टी.) ट्रेनिंग पास कर ली है, यह कह दो। एम.ए. पास भी कई हो जाते हैं मगर यह जरूरी नहीं कि वे Teacher (टीचर) बन सकें। सो गुरु-पद भी एक Commission (फरमान) परमात्मा की तरफ से है। सन्त कई हो सकते हैं, मगर गुरु कोई कोई हो सकता है। It is a selection from God (यह प्रभु का चुनाव है)। यह नहीं कि नीचे से दस बीस आदमियों ने President (प्रेज़ीडेंट) चुन लिया या सौ आदमियों की बहुत राय से कोई न कोई चुन लिया। कोई सेक्रेटरी बन गया। नहीं। यह ऊपर से Commission (फरमान) मिलती है, जाओ काम करो। दशम गुरु साहब को कहा गया कि “मैं सुत तो य निवाजा”, मैं तुमको पुत्र बनाता हूँ जा। समझो! Commission (फरमान) मिलती है। यही हाफिज़ साहब ने कहा कि मुझे खातम, अंगूठी, दी गई काम करने को। जो जैसे यहां पर कोई दो, चार, पांच आ जायें, तो मैं अर्ज कर रहा था कि जिसके अन्तर जितना कुछ ऊँची जमात में जाना है तो अवश्य उसके पास जाना होगा, जो उसको हासिल कर चुका है, उस तालीम को, और Competent (समर्थ) है सिखलाने के लिये। वह एक महीने में आपको वह पढ़ा देगा जो कोई दूसरा आदमी शायद दो महीने में भी नहीं पढ़ायेगा या साल भर में भी नहीं पढ़ायेगा क्योंकि वह पढ़ना जानता है। इस तरह जो गुरु पद है नहीं यह एक Commission (फरमान) है परमात्मा की तरफ से। सब महापुरुषों ने इस बात का इकरार किया है कि हमें परमात्मा की तरफ से Commission (फरमान) मिला है। उनकी बाणियों को गैर से पढ़ो।

तो ऐसी हस्तियां भी दुनिया में आया करती हैं। दुनिया कभी खाली नहीं रही। यह क्यों आया करती है? कि जिनके अन्तर अपने आपको जानने की, प्रभु को जानने की प्रबल ख्वाहिश बन चुकी है उनको प्राप्त हो जाये। Demand और Supply (मांग और पूर्ति) का नियम अटल है, जहां आग जलेगी वहां (ऑक्सीजन) मदद को आयेगी। There is bread for the hungry and water for the thirsty. (भूखे के लिये रोटी और प्यासे के लिये पानी) कानून है। बच्चा पैदा होता है, जो पांच हजार साल पहले हआ पैदा, पांच सौ साल पहले हुआ, अब हुआ या आगे होगा उसके लिये कुदरत की तरफ से यह नियम बना है कि दूध का सामान माता के अन्तर पैदा होने

से पहले ही कर दिया जाता है। No Exception (यह नियम सबके लिये है)। यह अलेहदा बात रही कि कोई माता बीमार हो। तो इसी तरह जब जब दिल में खाहिश (इच्छा) प्रबल होती है उस प्रभु के देखने की, ये आँखें उसको देखना चाहती हैं, हमारी आत्मा उस प्रभु की अंश है, हर जुज (अंश) कुल (अंशी) से मिलना चाहता है, यह खासा (गुण) है-जुज, कुल से मिलना चाहता है, जब उसकी तवज्जो बाहर फैलाव से हटती है, इसकी आत्मा में Innate ज्ञातीयत के लिहाज से (आर्थिक जन्म-जात गुण करके) उस प्रभु को पाने की खाहिश (इच्छा) प्रबल होती है। समझो! कुदरती खासा (गुण) है इसका (आत्मा का), एक Candle (दीपक) को जलाओ, उसकी Flame (लौ) उलटी कर दो तो भी वह ऊपर जायेगी क्योंकि उसका मंबा (जीत) सूर्य ऊपर है। इसी तरह आत्मा बाहरी फैलवा से हटे तो कुदरती बात है इसके अन्तर Overself (प्रभु) से मिलने की खाहिश प्रबल है। जब यह ख्याल बड़ा प्रबल होता है तो नतीजा क्या होता है? वह उसको पाना चाहता है, हर हीला वसीला करता है। हर एक के पास वह दौड़ता है, महाराज! परमात्मा कैसे मिले? मैं क्या करूँ? अब अन्तर एक Innate (जन्म जात) कुदरती कशिश मौजूद है, वह मजबूर करती है इन्सान को। इसलिये वह भागा दौड़ा फिरता है प्रभु को पाने के लिये। वह बड़ा Sincerely (सच्चा दिल से) किसी न किसी के पास जाता है, जो वह सिखलाता है, वह करने को तैयार है, मगर सवाल यह आता है कि So called (तथाकथित) महात्मा तो बहुत है, जो Acting और Posing (एकटिंग-पोजिंग) कर रहे हैं। उन्होंने आप तो उस चीज़ को पाया नहीं जिसको वह लोगों को दिलवाना चाहते हैं। जब खुद ही नहीं पाया तो दूसरों को क्या देगा।

जिस दा साहब भुक्खा नंगा होवे तिस दा नफर कित्थों रज्ज खाये॥

जिसके पास आपही खुद कुछ नहीं, न खाने को, न पहनने को, और भई तुमको कहां से देगा? यह लेक्चरबाजी का मजमून नहीं, यह मन-बुद्धि के विचारों का मजमून नहीं। तो वह (जिज्ञासु) तलाश करता जब तजरबा तल्ख (कटु अनुभव) होता है तो वह कहता है It is all Gurudom (यह सब पाखण्ड है)।

जो मन इन्द्रियों के घाट पर बैठे हैं चाहे लेक्चर देने वाले हैं, कथा करने

वाले हैं, बाहरी आडम्बर बना रखा है, हकीकत को खुद पाया नहीं, दूसरों को कैसे देंगे! गुरु की तारीफ परिभाषा यही दी है⁷ जो अंधेरे में प्रकाश करे। गो-रू! जो अंधेरे में प्रकाश करे। यह प्रकाश कहां होता है? जब अदृष्ट और अगोचर बने, बाहर से हटे, अन्तर्मुख हो, इन्द्रियों के घाट से ऊपर आये, तब। वह ज्योति सबमें है। परमात्मा ज्योति स्वरूप है, God is Light, खुदा नूर है। जो उस नूर का देख ले वही सिख है सच्चे मायनों में।

पूर्ण जोत जगे घट में ताहि खालस ताहि न खालस जाओ॥

जिसके अन्तर पूर्ण ज्योति का विकास हो गया है, उसका नाम खालसा है, निरोल खालस। खालसा के मायने हैं, Pure, unalloyed. जो इन्द्रियों की आलायशों (विकारों) से आज्ञाद है, ऊपर आ चुका है। यही और महात्माओं ने कहा। मुसलमान की तारीफ (परिभाषा) यही⁸ कि जो कोहेतूर पर चढ़कर खुदा⁹ के नूर को देखता है वह मुसलमान है। यह तारीफ दी है। हिन्दू की भी यही तारीफ दी है। जो परमात्मा की ज्योति को घट-घट में देखता है वह हिन्दू है। ईसाइयों ने यही कहा कि जो Light of God (परमात्मा की रोशनी) को देखता है वही ईसाई है। भाई तारीफ तो एक सी दी है। वह Light (रोशनी) घट-घट में है। तुम अब आँख बन्द करो तो अन्धेरा है न। जो हस्ती (समर्थ पुरुष) इस अंधेरे की स्याही को दूर करे-

परदा दूर करे आंखन का निज दर्शन दिखलावे॥

जो अन्तर की आंख खोलकर तुमको उसका First-hand Experience (व्यक्तिगत अनुभव) दे सके, उसका नाम गुरु है। इसी¹⁰लिये गुरु नानक साहब ने बड़े जोरदार लफ्जों में फरमाया -

जे सौ चन्द उगवे सूरज चढे हजार ॥

एते चानण होंदियां गुर बिन घोर अन्धार॥

कितने ही चन्द्रमाँ¹¹ चढ़ जायें, हजारों सूरज चढ़ जायें, अगर अनुभवी पुरुष नहीं मिला, पूर्ण पुरुष नहीं मिला, जिसको लफ्ज गुरु से याद किया है, तो घोर अन्धेरा ही रहेगा।

गुरु बिन घोर अंधार गुरु बिन समझ न आवे॥

गुरु बिन सुरत न सिद्ध गुरु बिन मुक्त न पावे॥

जिसने देखा नहीं, वह बयान तो करेगा, मगर Round about way में

(गोल मोल तरीके से) करेगा, Clear cut (स्पष्ट) बात नहीं होती उसकी। जिसने देखा है वह कहता है - I have seen it (मैंने देखा है, मैं देखकर कह रहा हूँ)। इसीलिये कहा कि सन्तों की शहादत को सुनो-

सुन सन्तन की साची साखी॥ सो बोलें जो पेखें आखी॥

वह सच्ची शहादत है। समझो! जो आँखों से देखा वह बयान है। अगर आपने, जो भाई यहां आते हैं, यह जगह देखी है किसी से एक आदमी जिसने खारी पढ़ा है यहां के मुत्तलिक, उसके पढ़ने में, समझ में, तर्जे बयान में, पढ़ा है न, लिखने वाले के तर्जे बयान से उसने अन्दाज़ा लगाया है¹ खुद देखा नहीं। जिसने देखा है, वह कहता है, हाँ भई फलानी जगह है, मैं देखकर आया हूँ। Very clear-cut (साफ बात)। तो घोर अन्धकार रहता है, असलियत समझ नहीं आती है² Clear cut Talk (साफ बात) नहीं होती है। अपने दिल का कुफर³ (अथर्वा शब्द) टूटा नहीं, दूसरों का कुफर⁴ कैसे तोड़ सकता है? Intake नहीं होती (बात मन में बैठती नहीं) Understanding clear-cut नहीं (बात समझ में नहीं आती), सुरति जागती नहीं, Awakening (जागृति) होती नहीं, बगैर अनुभवी पुरुष के मुक्ति को नहीं पा सकता। सब मन इन्द्रियों के घाट पर फँसे पड़े हैं। तो ऐसी हस्ती जब भी मिलेगी न, उसका नाम आप कुछ रखो, किसी महापुरुष की बाणी लो, इस पर ताकीद की है कि जिस चीज़ को तुमने पाना है, जो पा चुके हैं, उनकी सोहबत में जाओ! अगर Karmic Reaction (पिछले कर्मों की वजह) से कोई थोड़ी बहुत अन्तर में चमत्कार हो भी जाये, मगर आगे Way out (निकलने का रास्ता) कोई भी नहीं, किधर जाये। समझो! हम ये नहीं जो नज़र आ रहे हैं। हम In the make (बन रहे) हैं कोई ज्यादा पढ़ कर आया। जो पांचवीं पढ़ कर आये वे छठी में चले गये। जो पहली पढ़कर आया, दूसरी में चला गया। जो दसवीं पढ़कर आया है, एफ.ए. में शुरू हो गया। अपनी-अपनी Background (पुरबले संस्कार) हैं मगर पिछला Reaction जो भी जाये, तब तक Futher way up न हो (आगे रास्ता न खुले), किधर जाये। गुरु अमरदास जी साहब ने फरमाया-

फिर धिर आये गुरमुख मत पावणेयां॥

जो पढ़े-पढ़ाये पर चलते हैं, अपनी बुद्धि विचार से, ऐसे पुरुषों की Guidance(मार्गशिर्ष) से, जो⁵ मन बुद्धि के घाट पर हैं, वे कहीं तक जा सकते

दृश्य

हैं+ जहां तक वे गये। यह मन बुद्धि का मज़मून नहीं। “इन्द्रियों दमन हों, मन खड़ा हो, और बुद्धि भी स्थिर हो तब आत्मा का साक्षात्कार होता है।” बुद्धि भी स्थिर हो। यह सारा सिलसला बुद्धि का ही फैलाव है न। हम अब बुद्धि से काम ले रहे हैं। Reasoning is the help and reasoning the bar (विचार मददगार है और विचार बाधा है)। समझना है एक चीज को, क्या है। जिसने देखा है उससे समझोगे, बड़ा Clear-cut (साफ़) मज़मून मालूम होगा। जिसने खुद नहीं देखा, वह Roundabout way में Beating about the bush करेगा (गोलमोल बात करेगा), बस।

जिसके अन्तर यह खाहिश (इच्छा) प्रबल हो चुकी है, उससे (अनुभवी पुरुष से) मिलने की खाहिश है, कोई मिल जाये। समझो! दिल में कुदरती उमंग है, जातीयत के लिहाज से। वह क्या करता है? वह तलाश करता है। कहाँ पर? जहां हो सके। तो ऐसे पुरुष की हालत, इकबाल शायर हुए हैं, उन्होंने बयान की-

कभी ऐ हकीकते मुसतरिद, नज़र आ लबासे मजाज़ में।

कि ऐ छुपी हुई हकीकत। तू कभी प्रकट होकर आँखों के सामने आ-
कि हज़ारों सजदे तड़प रहे हैं मेरी जबीने नयाज़ में।

कहते हैं कि मैं अन्तर ही अन्तर में तड़प रहा हूँ, तेरे दर्शन करने को। एक नहीं, दो नहीं हजारों सजदे, बार-बार, कि ऐसी हस्ती तू कहां पर हैं? है, इसमें शक नहीं कि वह हमारे घट-घट में मकान है (घट-घट वासी है), सब महात्मा यही कहते हैं। जैसा मैंने अभी अर्ज किया-

एका सेज सुत्ती धन कान्ता। धन सुती पिर सद जागंता॥

ग्रन्थों-पोथियों में हम यही पढ़ते हैं, महापुरुष सब यही कहते हैं। गुरु अर्जुन साहब ने फ़रमाया कि हम एक ही घर में बस रहे हैं, एक ही मकान में, एक ही घर में आत्मा और परमात्मा दोनों भाई बस रहे हैं मगर-

मित्र बात न करते भाई।

अफसोस है कि नहीं? जिसको यह पता हो कि जिसको मैं तलाश कर रहा हूँ बाहर ग्रन्थों-पोथियों में, बाहर तीर्थों-तटों पर, और-और सामानों में, वह त्रैरी आत्मा की आत्मा है, घट-घट में है- “है घट में सूझत नहीं।”

“ सब कुछ घर में बाहर नाहिं। बाहर टौले सो भरम भुलाहि॥

बाहर से हमने मदद लेनी है। यह अपराविद्या है। ग्रन्थों-पोथियों को पढ़ो, पाठ-पूजा, तीर्थ व्रत यह व्रत यह सब Body-consciousness (देह-ध्यास) से ऊपर नहीं आते वह हकीकत बन्द रहती है-

है घट में सूझत नहीं लानत ऐसी जिन्द।

तुलसी या संसार को भया मोतियाबिन्द॥

हमारी आँखों के आगे मोतियाबिन्द, पानी का परदा आ रहा है, कोई डॉक्टर उसको हटा दे, नज़र बहाल हो जाये (नज़र खुल जाये)।

भीखा भूखा को नहीं सबकी गठड़ी लाल।

सबमें वह परमात्मा विराजमान है, वह हमारी आत्मा की आत्मा है-

गिरह खोल नहीं जानते तांते भये कंगाल॥

जड़-चेतन की ग्रन्थि है, हमको उसको एनलाईज़ (Analyse) करना, खोलना नहीं आता। इसलिये इतनी दौलत के होते हुए हम भूखे के भूखे मर रहे हैं। सब महापुरुष यही कहते हैं।

और जिनके अन्तर इतनी जबरदस्त, प्रबल, खाहिश बन जाती है न, उनके अन्तर क्या ख्याल आता है? आपको पता है, भगवान् कृष्ण थे। एक बार राधा वौरा गोपियों से दूर हो गये। उनके अन्तर अब खाहिश है उनसे मिलने की। वे तड़प रही हैं, बिरह सोज़ में जलती हैं। तो यह हालत सुनकर भगवान् कृष्ण जी ने ऊधों को भेजा, जाओ भई उनको ज़रा ज्ञान-ध्यान समझा आओ की परमात्मा तुम्हारे अन्तर है, तुम क्या करते हो? वे गये, बड़ी, ज्ञान-ध्यान की बातें सुनाई। सुन चुकने के बाद कहने लगीं, “तेरी सब बातें सच्ची हैं, नहीं शक इसमें नारायण”। कि ऐ नारायण जो कुछ तुमने कहा है न, वह सब ठीक है। मानते हैं कि वह हमारी आत्मा की आत्मा है, वह हमारे घट-घाट में है। हम उससे दूर नहीं, वह हमसे दूर नहीं। यह सब हमने भी पढ़ा है और समझा है। मगर तू यह बता-

जो हो सूरत का मस्ताना, वह कैसे परचे बातों से।

जो उसको देखना चाहता है, वह तुम्हारी बातों से कैसे परचेगा! तो गुरु हस्ती जो होगी न, वह आपको वह परिचय देगा, वह आँख बनेगी जिससे उसकी ज्योति नज़र आती है, वे कान बनायेगा जिससे उसकी श्रुति सुनाई देगी, उद्गीत, सत बाणी सुनाई देगी। जिसमें यह समर्था है, उसका नाम साधु,

सन्त और महात्मा है। यह महात्माओं की तालीम का सार (Digest) पेश किया जा रहा है।

ग्रन्थों-पोथियों के पढ़ने में क्या है? इनमें क्या चीज़ है? उन अनुभवी पुरुषों की बाणियाँ हैं, जिन्होंने अनुभव को पाया है। उनको भी हम ठीक-ठीक नहीं समझ सकेंगे उस वक्त तक, जब तक किसी उस अनुभव के रखने वाले^{से} न सुनें। सुनी-सुनाई बातें तो कुछ और होती हैं न बुद्धि के घाट पर की हुई बात और होती हैं। यह (परमार्थ) कहां से शुरू होता है? Where the world's philosophies end, there the religion starts. मैंने एक सिख लीडर से पूछा, जो माने हुए हस्ती हैं, मैंने कहा भई जो हम महात्माओं के कलाम पढ़ते हैं उनकी जो ग्रन्थ-पोथियाँ हैं, हमने इन्हीं को आधार समझ रखा है। यह बेशकीमत (बहुमूल्य) कलाम है, हीरे और जवाहरात से ज्यादा कीमती हैं, उन लोगों के लिये, जो प्रभु की तरफ जाना चाहते हैं। समझो! उनके लिये एक-एक लफ्ज़ बड़ा कीमती है। मगर जो यह बाणियाँ कहती हैं, अनुभवी पुरुष कहते हैं, उसको मानो न। वे तो कहते हैं जाओ किसी ऐसे के पास जिसने उसको पाया है। हम कहते हैं, नहीं हम पढ़कर पहुंच जायेंगे। भई कैसे पहुंचोगे? जिसने देखा है उसकी बात को सुनो। जिनकी देखी बातें हैं, उनको भी, केवल सुनकर, आप इन्द्रियों के घाट से ऊपर नहीं आ सकते। शौक बनेगा, रुचि बनेगी, Way out नहीं होगा? (अन्तर रास्ता नहीं खुलेगा), समझो! ग्रन्थ पोथियाँ हम पढ़ सकते हैं मगर Right Import (सही मायने) को नहीं समझ सकेंगे, उस वक्त तक, जब तक किसी आमिल (अनुभवी) पुरुष से न सुनें जिसने अनुभव पाया है। समझो तो किसी महापुरुष की बाणी लो, इसी बात पर जोर दिया है। अब ऐसे पुरुष मिलते कहां हैं जिनके अन्तर यह प्रबल खाहिश है। सच्ची बात तो यह है कि हजारों, मन्दिरों, मस्जिदों, गुरद्वारों, ठाकुरद्वारों, गिरजों में जाने वालों में से कितने लोग हैं जो सचमुच प्रभु की तलाश कर रहे हैं? हम ग्रन्थों पोथियों को पढ़ते हैं, स्वाध्याय कहते हैं, धर्म स्थानों में भी जाते हैं, जाकर, अगर हर एक से पूछो न दिल की बात तुम क्यों आते हो? भई मेरा बीमार है, राजी हो जाये, मेरी रोज़ी बन्द है वह खुल जाये, मेरा फलाना मुकदमा है वह जीता जाये। हम वहां भी जाते हैं परमात्मा को एक Tool (साधन) समझकर दुनिया की चीजें पाने के लिये

वहां जाते हैं। तो हम किस के पुजारी हुये? दुनिया के हुए न! उसको मददगार चीज़ समझा है। इन्सान, मुआफ करना मिसाल तो बड़ी बुरी है, कि गर्ज हो तो गधे को भी बाप कह देता है। असल में वे दुनिया के पुजारी हैं, परमात्मा के पुजारी नहीं। हकीकत में ऐसे लोग कहां जायेंगे मरकर? जहां आसा तहां वासा!

मजनूं था। लैला का बड़ा चाहने वाला था। इतना कि जहां-जहां वह चलती थी, पांव खेती थी, उस जगह पर सजदे करता जाता था। (मथा टेकता जाता था)। लोगों ने कहा, "भई देख मजनूं! खुदा तुझे मिलना चाहता है।" कहने लगा, "अच्छा, उसको कहो कि लैला की शकल बनकर आये।" उसको खुदा चाहिये तो लैला की शकल में चाहिये। हमको अगर परमात्मा चाहिये तो दुनिया की चीजों के मिलने के लिये। तो मजनूं अगर मरेगा तो क्या मिलेगा? लैला मिलेगी न, खुदा तो नहीं मिलेगा। तो सच्ची खाहिश वाले कितने लोग हैं? जिनके अन्तर सच्ची खाहिश है। उनको, जो दुनिया को चाहते हैं, वह जहां से मिले, कहीं से मिल जाये। भई खाहिश वाले, जिनको परमात्मा की खाहिश है, वे इन चीजों में उलझते नहीं। वे समझते हैं यह सारा सामान यहीं रह जायेगा। गर्ज से गर्ज है। जो भी उस गर्ज को हासिल करने के लिये मदद दे सके उसको मिलना चाहता है। तो इस वक्त एक शब्द आपके सामने श्री गुरु रामदास जी साहब का आ रहा है। गौर से सुनिये वे क्या कहते हैं :

(1) कोई आण मिलावे मेरा प्रीतम प्यारा हौं तिस पे आप वेचाई॥

फ्रमाते हैं कि मेरे दिल में उस प्रीतम के मिलने की प्रबल खाहिश बन चुकी है (Ruling Passion कहते हैं), उसको कई मिला दे। कौन हो? कहते हैं कोई हो, कोई भी हो, कोई परवाह नहीं, जो मिला सके मिला हुआ ही मिलायेगा न! कहते हैं कौन हो? कहते हैं कोई हो। ए हो, सी हो, डी हो। कोई फिक्र नहीं-

मरदे हज्जी मरदे हाजी रा तलब।

अगर तुमको हज करने की खाहिश है तो किसी हाजी को साथ ले लो, जिसने हज किया है। कहते हैं वह कौन हो?

खाह हिन्दू खाह तुरको खाह अरब॥

कि चाहे वह तुर्क हो, अरबी हो, हिन्दु हो, जर्मन हो या फ्रेंच हो, इसका

कोई सवाल नहीं। जिसने हज किया है, जो उसको मिला सके, कोई हो। मीरा बाई थी। बादशाहजादी थी। रविदास चमार के यहां गई। फिर? बघेल सिंह राजा थे। कबीर साहब जुलाहे के यहां गये। तो सवाल तो एक चीज़ के पाने का है। आपने डॉक्टर बनना है, जाओ डॉक्टर के पास जो डॉक्टरी में माहिर है, जिस्म की साईंस (Science) से वाकिफ़ है, Anatomy (शरीर विज्ञान) को जानता है। हर एक के बीमारी के Causes (कारण) को जानता है और कैसे वह दूर हो सकते हैं, उसमें माहिर है। उसके पास जाओ। वह कोई हो। जब तुम सख्त बीमार हो जाते हो तो कहते हो बुलाओ किसी डॉक्टर को। कौन हो? कहते हो जो लायक हो। सिंह और खान का कोई फर्क नहीं रहता। तो कोई हो, ए हो, ही हो, सी हो। वह क्या करे? “आज मिलावे मेरा प्रीतम प्यारा।” प्रीतम जिसको मैं चाह रहा हूं, मेरी आत्मा का प्रीतम परमात्मा, उसको पाने की खाहिश प्रबल है कि मैं अपने प्रीतम से मिलूं। अब वह तलाश करता है, कोई मिला दे। कौन हो? कोई सवाल नहीं। जो मिला दे। कहते हैं, तुम क्या दोगे? कहते हैं अपने आप को बय-खरीद कर दूंगा, सारी उम्र का पट्टा लिख दूंगा मैं तुम्हारा बय-खरीद हूं। किस लिये? प्रीतम के मिलने के लिये। जो Helping Factor (सहायक) हो उसका एहसान कितना है? जो मिला है, हमको मिला दे। अब हम मन इन्द्रियों के घाट पर हैं। हमको इन्द्रियों के घाट से ऊपर जाकर उसका Contact (संपर्क) दे दे, First hand experience (व्यक्तिगत अनुभव) दे दे। अरे भई कोई दे, दे सही। देने वाला हो, एक हो, दस हों, पचास हों, खुशी की बात है। तो कहते हैं, “कोई आण मिलावे मेरा प्रीतम प्यारा, हाँ तिस पे आप वेचाई।” मैं अपना आप बय-खरीद कर दूंगा। मिलने का सवाल है। एक जगह और गुरबाणी में कहा कि फर्ज करो तुम्हें उस प्रीतम की बात आकर सुनाये तो तुम क्या दोगे? फरमाते हैं-

सीस बड़े कर बैसण दीजे बिन सिर सेव करीजै॥

कि सिर काटकर तो कुर्सी बना दूंगा और बगैर सिर के उसकी सेवा करूंगा। जरूरत का मोल है भई। जिसने गाना सीखना हो वह तानसैन की जूतियाँ झाड़ता फिरेगा। जिसने गाना नहीं सीखना चाहे तानसैन उसकी जूतियाँ झाड़ता फिरे। गुरु नानक साहब जैसी हस्ती को लोगों ने कुराहिया कहा, जिनकी आँख नहीं खुली थी। दूसरों ने कहा, यह परमात्मा चलता

~~मंसिर~~
फिरता है। कसूर के शहर में दाखिल नहीं होने दिया।

तो मेरा अर्ज करने का मतलब है कि खाहिश हो सही, फिर वह तलाश करता है, कोई हो जो मुझे प्रीतम से मिला दे, मैं अपने को बय-खरीद कर दूँगा उस पर। कहते हैं, अरे भई तुम इतनी कुर्बानी क्यों करते हो? आगे जवाब देते हैं-

(2) दर्शन हर देखण के ताई॥ दर्शन हर देखण के ताई॥

कहते हैं इसलिये कि मैं हरि के दर्शन करना चाहता हूँ, वह मेरा प्रीतम है। कोई मिला दे। जो मिला दे मैं सारी उम्र उसका बय-खरीद रहूँगा। तो असल प्रबल खाहिश किस बात की है? हरि के पाने की! जो हरि को पा चुके हैं हमें हरि से मिला सकते हैं, जोड़ सकते हैं, अन्तर की आँख खोल सकते हैं, जिससे उसकी ज्योति नज़र आ सकती है। भई हम सब कुछ देने को तैयार हैं जो भी मददगार चीज़ है न, उसका शुक्राना है। इसीलिये आपको पता है, गुरु को परमात्मा के मुकाबले में, तमीज़ी बयान है, गो (चाहे) परमात्मा और नहीं, गुरु वह पोल (शरीर) है जिस पर परमात्मा प्रकट है, इजहार कर रहा है। है वही, मगर जिस पोल पर वह इजहार कर रहा है, उसका शुक्राना पहले किया जाता है। एक चीज नीचे पढ़ी है। एक आदमी नीचे गिरा। मैंने हाथ नीचे किया, उसको पकड़ कर ऊपर खैंचा। हाथ था सामने। मगर था मैं। तो कहते हैं इन दोनों में कौन अफ़ज़ल (बड़ा) है? तो कहते हैं, हाथ जो मुझे पहले खैंचने वाला हआया। गुरु अमरदास जी साहब ने बड़े प्यार से समझाया-

हम नीच ते उत्तम भये हर की शरणाई॥

कि कभी हम भी ऐ भाइयो! तुम्हारी तरह इन्द्रियों के घाट पर थे-

पाथर भुब्दा काढ लिया साची वडियाई॥

और आगे कहते हैं,-

जब ते गुरमत बुध पाई॥

गुरमत जब मिली। अब गुरमत दो किस्म की है। अनुभव पुरुष की मति जब उसको मिली उस दिन से, अब हम इन्द्रियों के घाट पर नहीं हैं। क्योंकि ऐसे अनुभवी पुरुषों की तामील कहां से शुरू होती है? जहांसे दुनिया के फिलसफे खत्म होते हैं। वह आप को अपराविद्या के साधनों में नहीं लगाता। वह यह कहता है कि अपराविद्या के साधनों से फायदा उठा लो। ग्रन्थ पोथियां

पढ़ो, शौक बढ़ेगा। रोज पढ़ो। सन्तों महात्माओं की बाणियां गोदी हैं माता की। गिरकर इंसान संभलता है। जब पढ़ोगे, फिर तवज्जो उधर जाती है, फिर शौक बढ़ता है। इसलिये अगर इनको पढ़ो, नियम करो, पूजा पाठ करो, यह करो, वह करो, यह इसलिये है कि हमारी रुचि उधर की बने। बैठते उठते उसकी याद करो। दुनिया हममें बस गई दुनिया का सुमिरन कर करके। अब लोहे को लोहे से काटना है। अगर बसी हुई हालत दुनिया की जो घट में है उसको हमने हटाकर प्रभु को बसाना है तो अवश्य सुमिरन से काटना होगा। दुनिया के सुमिरन को प्रभु के सुमिरन से काटो। ये मददगार चीजें हैं, Elementary Steps (पहले कदम) हैं। हम यह क्यों कहते हैं? कि उसके दर्शन हों। हम उसको पाना पाना चाहते हैं। अगर सारी उम्र यह करता रहा और दर्शन नहीं हुये यह जन्म तो बरबाद चला गया। अपराविद्या के साधनों से मुक्ति नहीं है, मुक्ति आत्मानुभव से है, पराविद्या से है, आत्म-तत्त्व के बोध से है। मनुष्य जीवन में ही तुम इसको पा सकते हो। समझो! तो बड़े प्यार समझा रहे हैं, हम भई सब कुछ, सारी उम्र की गुलामी सिर लेने को तैयार हैं, अगर कोई भी हमको मिला दे। तुम किस को मिलना चाहते हो? कहते हैं, हरि को -

कृपा करे तां सतगुर मेले हर हर नाम ध्याई॥

जब इतनी प्रबल खाहिंश दिल में बढ़ती है, तो क्या होता है? परमात्मा सामान करता है। कहता है, यह जीव मुझे मिलना चाहता है। तो वह क्या करता है? किसी सतगुर को मिला देता है। सतगुरु हमारी हम-जिन्सियत (सहजातीयता) रखता है, मगर वह सत का स्वरूप हो चुका है। मन इन्द्रियों के घाट का गुलाम नहीं। सत के इजहार की जगह बन चुका है। वह सत की धारा उसमें बह रही है, वह पोल है, उसको मिला देता है। खुद नहीं आता, जिस पोल पर वह इजहार कर रहा है - है तो सब में न, जिस पोल पर वह इजहार कर रहा है उसको मिला देता है। बस!

सत्गुर सत सरूप है

सतगुरु वह पोल है, जिस पर सत् का इजहार हो रहा है, वह सत का स्वरूप है। उसकी आत्मा मन-इन्द्रियों के घाट से आज्ञाद होकर उसका (प्रभु का) Mouthpiece (मुख) बन चुकी है। Demand and Supply (जहां प्राप्ति जरूरत है उसके पूरा करने का भी सामान है) का नियम अटल है। आग

जलेगी तो ऑक्सीजन मदद को आयेगी। खाहिश प्रबल हो अवश्य नतीजा होगा उसका? यह सामान कुदरत की तरफ से है। सतगुरु क्या करता है? उसका काम क्या होता है?

सतगुर ऐसा जाणिये जो सबसे लये मिलाये जीयो॥

यह पहला काम है उसका। वह सबको मिलाकर बैठता है। वह Divisions (बंटवारा) पैदा नहीं करता। वह आत्म-अनुभवी है, आत्मा के Level (स्तर) से सबको देखता है। वह देखता है कि यह आत्मा देहधारी है, बाहरी कपड़ों के लिहाज से, ~~बाहरी से~~, बाहरी बनावटों के लिहाज से नहीं देखता। वह आत्मा की तरफ नज़र रखता है। यह पहली निशानी है। वह जब आता है, सारी दुनिया को रोशनी देता है। जैसे सूरज चढ़ता है सब को देता है रोशनी-They are the Children of Light, वे नूर के बच्चे होते हैं। जब आते हैं ~~जब~~ आते हैं सब को रोशनी देते हैं। यह पहली निशानी है। जो सामाजिक गुरु हैं न, वे आपको समाजों की तालीम देंगे। यह पहला कदम है। अगर यह भी ठीक तरह से प्रचार किया जाये तो दुनिया में सुख हो जाये मगर यह काम भी उन लोगों के हाथ में है जो अनुभवी नहीं है। किसी समाज में रहना एक बरकत है, Man is a social being (इन्सान, सामाजिक प्राणी है)। किसी समाज में रहो, मगर जो गर्ज़ है उसको हासिल करो। वह क्या? इन्सान, इन्सान के काम आये, दुनिया की यात्रा सफल हो, आत्मा का मिलाप प्रभु से हो। यहीं गर्ज़ है न हर एक समाज की? किसी स्कूल में दाखिल हो, गर्ज तो एम. ए. बन~~ना~~ है, बी.ए. बन~~ना~~ है कि नहीं। तो वह (अनुभवी पुरुष) किसी समाज में हो, उस का नज़रिया यह होगा। जो सामाजिक गुरु हैं, जिनकी अन्तर की आँख नहीं खुली है, वे कहते हैं⁺ नहीं भाई, हिन्दू भाई कहेंगे हिन्दू सबसे ऊंचे हैं, सिख कहते हैं नहीं सिखों के बगैर किसी की गति नहीं होंगी, जो क्रिश्चियन (ईसाई) हैं वे कहते हैं जो Christ (मसीह) पर ईमान नहीं लाया उसकी गति नहीं। अभी उस दिन मेरे पास एक इंग्लिश लेडी आई। बात करते हुये कहने लगी, "Christ (मसीह) पर जो ईमान लायेंगे उनका उद्धार होगा।" मैंने कहा, "पहलों का क्या हाल होगा?" वह कहता है मैंने खून बहाया है लोगों के लिये। भई ठीक⁺ चलो मान लेते हैं उन लोगों के लिये बहाया है जो उनसे मिले या चलो उसके बाद जो आये, उस पर ईमान

लाये। जो पहले आये थे उन बेचारों का क्या हाल होगा? कोई जवाब नहीं उन लोगों के पास। अरे भई परमात्मा वही है। जब से दुनिया बनी है, तबसे ही प्रभु के चाहने वाले भी आते रहे। तो उनका सामान कौन मुहैया करता रहा है? Demand and Supply (मांग और पूर्ति) का नियम अटल है। तो हर एक इन्सान अपनी जगह तंगदिली पैदा करता है, Division between class and class (समाजों में भेद भाव)पैदा करता है। गुरु नानक साहब से पूछा गया कि सबसे बड़ा मजहब कौन सा है? फ़रमाने लगे-

आई पन्थी सगल जमाती मन जीते जग जीत।

आई पन्थ योगियों में सबसे ऊँचा पन्थ गिना जाता है। तो कहते हैं कि सारे एक ही जमात में पढ़ रहे हैं ऐसा जानना, यह सबसे बड़ा मजहब है। किसी समाज में रहो, इतने ऊंचे चढ़ो कि सारी Creation सरी^(मनुष्य जाति) तुम्हारी एक समाज बन जाये।

मगरिब (पश्चिम) में, अमेरिका में मैं गया। वहां उन्होंने एक Meeting Arrange की (एक सभा बुलाई) कि East (पूर्व) और West (पश्चिम) के Representative (प्रतिनिधि) Talk (बात) करें। East (पूर्व) से मुझे चुना गया, West (पश्चिम) से उन्होंने फ्रांस से एक आदमी को बुलाया। जिस वक्त टॉक (Talk) हुई उस वक्त वह फ्रेंच जो था न, वह न आया। मैं ही रह गया। कहने लगे भई East और West आप ही का काम रहा। मैंने उनको कहा, भई इसमें शक नहीं कि किसी ने कहा कि "East is for the East and West is for the West and the two shall never meet" (पूर्व, पूर्व के लिये और पश्चिम, पश्चिम के लिये है और दोनों कभी नहीं मिलें)। मैंने कहा, यह बात नहीं। There is no East not West. East and West are made by man, not by God. (यह पूर्व और पश्चिम की तामीज़ इन्सान की बनाई हुई है, परमात्मा ने तो नहीं बनाई)। न कोई पूर्व है, न पश्चिम, न उत्तर है, न दक्षिण। There is one God and we all worship Him (एक प्रभु है, हम सब उसके पुजारी हैं) और Countries (देश) जितने हैं, ये उस परमात्मा के घर में अलहदा अलहदा कमरे हैं। हवाई जहाजों ने Distance (दूरी) का सवाल ही नहीं रखा। आज चढ़ो कल इंग्लैण्ड, परसों अमेरिका पहुंच जाओ।

तो सवाल यह है कि परमात्मा की नज़र जैसे है वैसे ही अनुभव पुरुषों की भी नज़र रही है। वे भी कहते हैं सब आत्मा देहधारी हैं। समझो! उनका नज़रिया देखिये, और हमारा नज़रिया देखिये। तो परमात्मा क्या सामान करता है, ऐसी तड़पती हुई रुह के लिये जिसे प्रभु से मिलने की प्रबल इच्छा है? वह किसी ऐसी हस्ती को मिला देता है जो उससे मिल चुका है, बस। वह क्या करता है? उसके पास कौन सी दवा है? 'हर हर नाम धियाई।' नाम को ध्याता है, In Contact लाता है (उससे जोड़ देता है)।

जिन्नी नाम धियाया गये मुसङ्कत घाल॥

नानक ते मुख उजले केती छुट्टी नाल॥

जिन्होंने नाम को ध्याया है, उनकी मनुष्य जीवन की जो मुशक्त (मेहनत) है, वह सफल हो गई, उनके अपने मुख मालिक की दस्गाह में उजले हो गये और उनके सबब से हज़ारों का, अनेकों का उद्धार हो गया। यह नाम के ध्याने की महिमा है। नाम को कैसे ध्या सकते हैं?

गुरमुख कोट उधारदा दे नांवे इक कणी॥

वह नाम की एक कणी देता है। अब नाम किसको कहते हैं? ठण्डे दिल से विचारिये। परमात्मा का कौन नाम नहीं, वह अनाम है, (Nameless है)। दशम गुरु साहब ने कहा "नमस्तग अनामग" "अशबदंग"। वह लय होने का मुकाम है। वह बयान में नहीं आ सकता है। न देखना है न सुनना है, उसमें लय होना है। वह जब Into Being आया, "एको अहं बहुश्याम" (मैं एक से अनेक हो जाऊँ):

एको कवाओ तिस ते हाये लख दरयाओ ॥

तो यह Creation (रचना) इजहार में आई एक Wish से (संकल्प से), वह जो Wish या उभार हुआ न, वह Into Action आया, जो Into Action (प्रकट) आकर नाम हुआ, उसे God in Expression Power (इजहार कर रही प्रभु पावर) कह दो।

नाम के धारे खण्ड ब्रह्मण्ड॥

नाम से सारे खण्ड ब्रह्मण्ड धारे गये। वह पावर है, अक्षर नहीं। उस पावर के बोध करने के लिये ऋषियों, मुनियों, महात्माओं ने अनेकों नाम रखे, उसके बुझाने के लिये समझाने के लिये, बोध कराने के लिये। ऐसे सब नामों पर हम कुर्बान हैं।

बलिहार जाओं जेते तेरे नांओं हैं॥

ये अक्षरी नाम हैं। इनसे हमने चलना है। इनका फायदा उठाना है। मगर अगला कदम यह है कि जिसको ये अक्षरी नाम बोध करा रहे हैं, उसके साथ जुङना है। इसका नाम है ध्याना। उस नाम में क्या है? दो चीजें हैं। एक तो Light (ज्योति) है। परमात्मा ज्योति स्वरूप है, एक प्रणव की ध्वनि है, उद्गीत है, समझे, कलामे कदीम है। उसका Contact (संपर्क) कहां होता है? जब आप इन्द्रियों के घाट से ऊपर आओ। जब तक हम इन्द्रियों के घाट पर बैठे हैं, इससे ऊपर नहीं आते, वह हम में है, हम उससे बेखबर रहते हैं। तो कोई महापुरुष जो हमको इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाकर उसका Contact (संपर्क) दे, हम ज्योति के देखने वाले हों, यह स्याही का परदा आँखों के आगे है, इस को हटा सके, Competent (समर्थ) हो, उस ध्वनि से Contact दे सके, वह तुमको ऊपर लायेगा, That is the way back to God (वह निज घर, प्रभु के पास वापस जाने का रास्ता है)। वह कहां ले जायेगा? जहां से उसका निकास है। अनाम में पहुंचायेगा, अशब्द में पहुंचायेगा। हम बाहरी अक्षरों को ही शब्द मानते हैं, गाना बजाना, तीर्थ यात्रा, यह वह, और बाहरी शब्द जो इजहार में है, यह शब्द तुमको फैलाव में ले जा रहा है, फंसाने वाला है।

एक शब्द गुरदेव का

एक और शब्द है जो गुरदेव द्वारा मिलता है, नाम कहो, शब्द कहो, वह शब्द जो है-

उत्पत्त परलै शबदे होवे, शबदे ही फिर ओपत होवे॥

उत्पत्ति और प्रलय शब्द के आधार पर होती है, जिस ताकत के आधार पर होती है, दुबारा सुष्ठि का आग्राज (शुरूआत) जिस ताकत के आधार पर होता है, उस ताकत का नाम है शब्द। वह शब्द तुमको अशब्द में ले जाने के काबिल है। उसका कहां Contact (संपर्क) मिलता है? जब आप इन्द्रियों के घाट से ऊपर आओ। तो एक आदमी सिर्फ बाहरी शब्द के या लाफ़ज़ के Expression को करता हुआ, यह चाहता है कि वह Expression का जो आधार है, उससे वह मिले, यह कैसे हो सकता है? तो अपराविद्या के जितने साधन हैं, ये सब इन्द्रियों के घाट पर ही रहे हैं। वह अदृष्ट और अगोचर है।

इन्द्रियों के घाट के साधन सारी उम्र करते रहो, शौक तो बनेगा, रुचि बनेगी, मगर इन्द्रियों के घाट से ऊपर जाना एक Practical (अनुभव का) मज़मून है। जब तक आप ऊपर नहीं आते, काम नहीं बनता। अब आप देखिये, जो कोई हस्ती आपको इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाकर उसका कुछ Contact (संपर्क) दे सकती है उसका कितना एहसान (उपकार) है? जो अपने आप कर सकते हैं, बड़ी खुशी से करें~~मगर~~ कर नहीं सकते।

फिर धिर आये गुरमुख वत्थ पावणेया ॥

फिर किसी आमिल के चरणों में जाना होगा। कई भाई सिर्फ ग्रन्थों पोथियों से शुरू होते हैं। कोई मुश्किल जब Practical (साधन की) अन्तर में बन जाये, फिर भागते हैं किसी आमिल के पास। भाई मुश्किल में फंसकर जो किसी~~आमिल~~ के पास जाना है, किताबें तो बोलती नहीं है। यह नहीं कि ग्रन्थों पोथियों में इस बात का जिक्र नहीं~~क्या~~ नहीं दिया उनमें? दिया है मगर यह पता नहीं किस सफे (पृष्ठ) पर है। जो~~आमिल~~ पुरुष हो वही जाने न। और बड़ी हैरानी की बात यह है कि हम ग्रन्थों-पोथियों पर तो यकीन करेंगे। आखिर ग्रन्थ-पोथियां क्या हैं। वह अनुभवी पुरुषों के ज़ाती (व्यक्तिगत) तजरबों (अनुभवों) के रिकार्ड हैं। तो हम ग्रन्थ- पोथियों पर तो यकीन कर लेंगे पर जिन्दा सत्स्वरूप हस्ती के पास जाने से इंकार करें~~देंगे~~। यह With due Deference (धर्म ग्रन्थों का मान रखते हुए) मैं कहता हूं कि हमें जरूरत है सब महात्माओं की, Past Gurus भी पुरातन जो गुरु हुए उनकी भी जरूरत है, मैं अर्ज करूँगा। इसलिये~~कि~~ अगर उनके बेशकीमत कलाम ज़ाती (व्यक्तिगत) तजरबों का रिकार्ड हमारे पास न होता हमें कभी यकीन न आता कि यह नया आदमी क्या कहता है। वे गवाही देते हैं, बोर्ड का काम करते हैं। एक आदमी और कहता है उसी अनुभव का। वह आपको Chloroform करेगा, बैठो, लो तजरबा। अगर सारे महात्मा एक ही बात कहें, एक Present (मौजूदा) आदमी भी यह कहता है कि हां यह ठीक है, बैठ जाओ। तो उसमें तुम्हें क्या आर (आपत्ति) है? तुम्हें कोई लोहे की Stamp (मुहर) थोड़ी लग जानी है। वह (अनुभवी पुरुष) तो सबको मिलाकर बैठता है। उसके लिये -There is no east nor west (वहां पूर्व और पश्चिम नहीं), वहां किसी एक या दूसरी समाज का सवाल नहीं। As a man

problem है (एक मानव समस्या है) तो जिसके अन्तर उसको पाने की प्रबल खाहिश है, वह तो भई तलाश करेगा। उसको, भूखे को, लज्जा-कुलज्जा (शर्म) नहीं। जिसको अभी बातें बनानी हैं उसके अन्तर अभी भूख नहीं भई। समझे! हमारे दिल में सब समाजों के लिये इज्जत हैं भई, सब धर्म पुस्तकों के लिये इज्जत है।

वे

ब्रेद करो ब कहो मत झूठे झूठा जो न बिचारे॥

पुरातन महात्मा जो हुए, उनके लिये भी हमारे दिल में इज्जत है क्योंकि उनके कलाम न होते तो हम कैसे परख सकते?

एक आदमी सख्त बीमार है। वह सख्त बीमारी की हालत में कहता है, मुझे बचाओ। एक डॉक्टर आया, वह कहता है, भाई पेट में पानी पड़ गया। वह (रोगी) क्या करता है? दो-चार डॉक्टरों का बोर्ड कर लेता है। जब सारे डॉक्टर यह फैसला कर दें कि वाकई (सचमुच) पानी है, उसने (रोगी ने) देखा नहीं पानी, मगर उस बोर्ड के फैसले पर वह कहता है भई ऑपरेशन कर लो। अरे भई एक महात्मा आपको कहता है कि यह बात ऐसे है, और सारे महात्मा उसकी गवाही देते हैं तो फिर करके देखने में क्या हर्ज है? तो सवाल तो भई भूख का है। ‘कोई आण मिलते।’ हरि के दर्शन की खाहिश हो, वह यह नहीं देखता, वह चमार है या ईसाई है या छीम्बा है या कोई और! ये क्षत्रीय, ब्राह्मण, छीम्बे हमने बनाये हैं। परमात्मा न तो कोई मोहरें लगाकर नहीं भेजा है। अरे भाई तुम कौन हो? परमात्मा ने तो आत्मा देहधारी बनाये। आत्मा का जाति वही है जो परमात्मा की है। यह अनुभवी पुरुष का नज़रिया है, जो मैं आपके सामने पेश कर रहा हूँ। तो कहते हैं, जब इतनी प्रबल खाहिश किसी हृदय में होती है तो परमात्मा देखता है यह बच्चा मुझे चाह रहा है। क्या करता है? मिले हुये को मिला देता है। वह क्या करता है? इसे नाम पावर के साथ जोड़ देता है।

खत्री ब्राह्मण शूद वैशा, उपदेश चहुं वरणों को सांझा॥

कल मैं नाम जपे उथड़े सो, नानक घट घट मांझा॥

नाम से ही मुक्ति सबने कही है। तुलसी साहब ने रामायण में क्या कहा, बाल-काण्ड पढ़िये। नाम की महिमा गाई है कि नाम से मुक्ति है।

अगुण सगुण दोऊ ब्रह्म सरूप्या।

कि निर्गुण और सगुण दोनों ही ब्रह्म के स्वरूप हैं। अगाध और अनूपा बयान करते हैं। कहते हैं मेरे मत में नाम दोनों से बढ़कर है। तो नाम सबके बनाने वाला है न! आखिर राम और नाम का मुकाबला करके कहा-

कहूँ कहा लग नाम बड़ाई॥ राम न सकत नाम गुण गाई॥

कि नाम की कितनी महिमा बयान की जाये, राम भी अगर बयान करना चाहें तो नहीं बयान कर सकते, क्योंकि जो बयान में आ नहीं सकती वह कैसे बयान होगी। सब महापुरुष आज दिन तक उस प्रभु^{के} गुणवाद गाते रहे। क्या वे^ह खत्म हो गये। हर एक महात्मा जो आता है नई भट्टी से उसको बयान करता है। तो उसकी महिमा गा रहे हैं।

(4) जे सुख दे ता तुझे अराधी॥ दुख भी तुझे धियाई॥

कहते हैं, हे परमात्मा, सुख हो या दुख हो हमें तो तेरी ही चाह है। किसी सूरत में तू भूल नहीं सकता है। जिसका प्यार हो न, मुआफ करना दुख हो तो वह और ज्यादा याद आता है। प्रभु को वह पाना चाहता है। हर हालत में उसी के पास जाना चाहता है। दुख आ जाये तो भी वह नहीं भूलता, सुख आ जाये उसमें भी नहीं भूलता Ruling Passion (लगन) जो बन गई। तो कहते हैं, हे परमात्मा! कोई भी तुझसे हमें मिला दे, हम सारी उम्र के लिये बय-खरीद हो जायेंगे उसके पास।

(5) जे भुख दे ता इत ही राजा दुख विच सुख मनाई॥

बड़ा प्रबल जिसके अन्तर एक बड़ी प्रबल खाहिश किसी चीज की हो, भूखा रहे तो कोई फिक्र नहीं, रोटी मिले न मिले। दुख में भी कहते हैं इसमें भी मुझे सुख है। मैं राजा हूँ। अगर तू मिल जाये तो तेरे साथ ही सब सुख है। स्त्री कितने आराम में हो, सुख में हो, अगर वह पति के घर से दूर है तो सुख कहाँ! स्त्री को हमेशा पति के ही घर में सुख है और कहीं नहीं। इसी तरह आत्मा को हमेशा का सुख परमात्मा की गोद में है। जिनकी आत्मा का विसाल (मिलाप) परमात्मा से हुआ वे राजाओं के राजा हैं। तो कहते हैं कि मेरे दिल में तेरे मिलने की खाहिश है। सुख हो, दुख हो, भूख हो, नग हो, कोई फिक्र नहीं। तू याद रहे, तू मिल जाये किसी सबब से, हर एक चीज मुबारिक है।

(6) तन मन काट काट सब अरपी विच अगनी आप जलाई॥

कहते हैं तेरी विरह और सोज़ इतनी प्रबल हो रही है कि मैं तन-मन को

काट-काट कर सब अर्पण कर दूँ। मुझे जलन है, तेरे मिलने की खाहिश है, प्रेम-ज्वाला दहक रही है। समझो ! इसमें मैं सब कुछ अर्पण करने को तैयार हूँ, तन भी और मन भी। मन को भी काटकर धर दूँ। वहां सोच विचार का सवाल नहीं, वहां लय होने का सवाल है। समझो! हम तन दे सकते हैं। मन कोई -कोई दे सकता है।

मन बेचे सत्गुर के पास॥ तिस सेवक के कारज रास॥

तन-मन सब सौंप गुर को हुक्म मनिये पाईये॥

तन का देना क्या है, कि इसको नेक-पाक रखो, सदाचारी रखो। जिस काम के करने के लिये वह कहे, वह करो। बुरे कामों में इसको मत लगाओ। पाँव बुरी तरफ न जायें, आँख बुरी तरफ न देखे, कान बुरे कामों को न सुनें। यह अर्पण करना है तन का। और मन का? बुरा चितवन न हो, किसी का बुरा न सोचो। अहिंसा को धारण करो, सत्य को धारण करो, नेक-पाक जीवन हो, ख्यालात भी अपवित्र न हों, निष्काम सेवा, सबसे प्यार, किसी से न फरत न हो। यह मन की सेवा है। Ruling Passion प्रबल इच्छा उस प्रभु के मिलने की बन जाये, फिर उसके लिये जो सामान मददगार हों, वह^१ अखित्यार कर, जो उससे उलट हों उनको छोड़ दे। कहते हैं तेरे मिलने की ज्वाला मेरे अन्तर भड़क रही है।

अलइश्क नारे तहर्रक मासिवाय अलमतलूब।

कुरान शरीफ कहता है कि इश्क कहो, प्रेम कहो, एक जलती ज्वाला है, अग्नि है, जिसमें सिवाय प्रीतम के और कोई चीज़ नहीं ठहर सकती है। यह एक ऐसा बाज़^२ है जब वह आ जाये तो कोई चिडिया पर नहीं मार सकती है, सब दुनिया नफी हो (निकल) जाती है। यह यकसूई का आलम है, सच्चा एकान्ती बनने का सवाल है। तुम्हारी लगन हो, हज़ारों में बैठे तुम एकान्ती हो। कहते हैं कि सब कुछ मैं अर्पण कर दूँगा, तू मिले। वह मिलता भी तभी है। कब? जब तन, मन, धन सभी उसके हवाले हो। तो कहते हैं ऐ सत्गुरु, मुझे प्रभु के मिलने की खाहिश है। उसके लिये जो कुर्बानी भी चाहिये मैं देने को तैयार हूँ। आपको पता है राजा जनक को जब अष्टावक्र ने यह सवाल किया कि तुम क्या चाहते हो? मैं परमात्मा का अनुभव करना चाहता हूँ, ज्ञान को पाना चाहता हूँ। तो कहा, दक्षिणा देनी होगी। कहने लगे, हां महाराज, दूँगा।

क्या दूं[॥] कहते हैं[॥] तन, धन और मन।[॥] यही सवाल वहां भी आया। फिर Practically (प्रेक्टीकली) करके दिया।[॥] तन को दे दिया?[॥] कहते हैं[॥] हाँ[॥] महाराज।[॥] कहते हैं, जाओ जोड़ों (जूतों) में बैठो।[॥] फिर मुँह से इकरार करता है, तुम कहां बैठे हो?[॥] कहते हैं,[॥] मैं जोड़ों में बैठा हूं, सबसे नीचे।[॥] लोक-लाज बड़ी बुरी चीज़ होती है, मगर कहते हैं[॥] मैंने एक चीज़ को पाना है, लोग अच्छा कहें या बुरा कहें[॥]

कोई अच्छा कहे भावें बुराकहे हम तन दीनो है डार।।

यह गुरु अर्जुन साहब कहते हैं। फिर कहा, देखो! सामग्री सब तुम दे चुके हो।[॥] कहते हैं, हाँ महाराज![॥] इसकी तरफ मन न ले जाओ।[॥] देखता है,[॥] जाता है मन। यह, यह है। आँखें बन्द कर लीं। न देखूं न मन जाये। यही घाट है न जिससे बाहर मन जाता है।

गुर दिखलाई मोरी जित मिरग पड़त हैं चोरी।

मूँद लिये दरवाज़े ताँ बाजे अनहद बाजे॥

Outgoing Outlets (बाहर फैलने के द्वार) ये Outgoing Faculties (बाहर फैलने वाली प्रवृत्तियाँ) जो हैं उनके बाहर फैलने का द्वार है इन्द्रियों का घाट। कान में आवाज आती है (राजा जनक के) फ़्लाना बोल रहा है। मन जाता है। कान भी बन्दकर लिये, आँख भी। न देखें न सुनें, न मन जाये। आदत बन चुकी है न मन की, Habit is second nature, बार-बार मन जाता है, फिर जाता है, यह भी दे चुका हूं। वापस लाता है, जाता है मन, फिर वापस लाता है। ऋषि पूछता है, राजन! तुम इस वक्त कहां हो?[॥] कहता है, महाराज मेरी गति उस कौवे की तरह है जो एक जहाज के मिस्तौल पर बैठा हो, चारों तरफ उड़-उड़कर जाये, कहीं बैठने को जगह न पाये, सब तरफ पानी-पानी नज़र आये, जाये और बार-बार लौटकर वापस आ जाये।[॥] उन्होंने कहा, अच्छा भई तुम मन भी दे चुके हो।[॥] मन से फुरना मत करो।[॥] साधना संयुक्त थे। थोड़ी देर के लिये खड़ा किया। उभार दे दिया, पिण्ड को छोड़कर रूह ऊपर आई।[॥] अन्तर में अनुभव को पा गया। तो मेरे अर्ज करने का मतलब यह है कि यह कीमत अदा करनी (देनी) होती है। प्रेम एक आसानीतरीका है जिससे जल्दी अदा हो सकती है। जिससे प्रेम हो, प्यार हो, सब कुछ उसके अर्पण है। जहां दिल गया, वहां सब कुछ गया। इसी के साथ है न !

मन दिया कहीं और ही तन साधु के संग।
 कहे कबीर कोरी गजी कैसे लागे हरि रंग॥
 इस तरह गति नहीं होगी।

मन बेचे सतगुर के पास॥ तिस सेवक के कारज रास॥

जो वह कहे उसके मुताबिक काम करो। अनुभव तुम्हारे अन्तर में है। तो कहते हैं मैं तन और मन काट-काट कर उस प्रेम-रूपी ज्वाला में हवन कर दूँगा। जब यह जिस्म जिसमानियत का ख्याल न रहा, अन्तर में जो ताकत बाहर जाती है बार-बार, वह भी बाहर जाने से रह जाये, फिर चीज़ वह आपके अन्तर में है, थोड़े उभार की जरूरत है, और तो कुछ नहीं,

(7) पक्खा फेरी पाणी ढोवां, जो देवे सो खाई॥

(8) नानक गरीब है पिया द्वारे, मेल लेहो वडियाई॥

कहते हैं ऐ सत्गुर! हम तुम्हारे वहां पंखा भी फेरेंगे, पानी की सेवा भी करेंगे। जो तुम दोगे हम खाने के तौयार हैं। सूखी रोटी दो, न दो, जो सेवा बख्खाएंगे, हम हर एक किस्म की सेवा करने को तैयार हैं। कहते हैं है सत्गुरु हम आपके दर पर आ गये। आप दया करके बिरद की लाज रख लो, हमारी लाज रख लो। हमारे दिल में उस प्रभु के मिलने की प्रबल खाहिश है, दया करो। हमें जो कहोगे हम करने को तैयार हैं। यह उन लोगों की कैफियत (हालत) है जिनको प्रभु के मिलने की जबरदस्त इच्छा, Ruling Passion बनती है, खाहिश बनी है। अब आगे दर्जे बदर्जे बयान करेंगे। कि वह क्या कहता है।

(9) अक्खी काढ धरी चरणंतल, सब धरती फिर मत पाई॥

(10) जे पास बहाले ता तुझे अराधी, जे मार कड़े भी धियाई॥

फरमाते हैं कि अगर प्रीतम आ जाये, तुम क्या करो? कहते हैं आँखों को काटकर उसके बिछाने के लिये बिछौना बना दूँगा। यहाँ इशारा दिया आँखों का। “आँखी काढ धरी चरणं तल,” तुम्हारे नीचे मैं अपनी आँखें बिछाकर रख दूँगा। फिर कहते हैं। क्या? “सब धरती फिर मत पाई।” सारी दुनिया में फिर-फिर कर आखिर मुझे यह समझ आई कि अगर ऐसा महापुरुष मिल जाये तो अपनी आँखों को उसके चरणों के नीचे बिछा दो और दूसरे उस हकीकत को पाना कहां होगा? जब आप आँखों के ऊपर चलोगे, नीचे नहीं।

तो पिण्ड में इस वक्त हमारी रुह फैल रही है। महात्माओं, पूर्ण पुरुषों की तालीम कहां से शुरू होती है? इन्द्रियों के घाट से ऊपर। यह आखरी इन्द्री है, आँख। इसका जिस्म में सबसे ऊँचा दर्जा है और इसका काम भी सबसे ऊँचा है। यह वह रास्ता है जहां से प्रभु को जाने का रास्ता मिलता है।

पुतली में तिल है तिल में भरा राज कुल का कुल
इस परदाए स्याह के जरा पार देखना।

इसकी Background जो अन्धेरा है, चलो आगे। रास्ते Way-out यहीं होता है। समझे! दो ही मार्ग हैं दुनिया में। एक है प्रेय मार्ग, दूसरा है श्रेय मार्ग। प्रेय मार्ग तो फैलाव का है। बड़ा प्यारा मालूम होता है। यह बाहरी जो है। मगर इससे रास्ता निकलने को कोई नहीं। दूसरा श्रेय मार्ग है। वह तंग और तार है।

तुलसी जग जाने नहीं अति उत्तंग पिया पन्थ।

बड़ा तंग तार रास्ता है। उसमें जब Way-up होता है, फिर खुलता ही चला जाता है। तो "दीदा शौ यकसर" मुर्झनुदीन विश्ती ने कहा, आँख बन जाओ भई। उसकी (अनुभवी पुरुष) की तालीम यहीं से शुरू होती है। बाहर भी आँखें बिछाना किसी के चरणों में है, उसका भाव दिल दिमाग पर रखता है। तो कहते हैं अगर ऐसी हस्ती मिले तो कहते हैं हम आँखें बिछा देंगे उसके रास्ते में। तो कहते हैं, अगर ऐ सतागुरु! अगर तुम हमें अपने पास बिठा लो हम तो इन्द्रियों के घाट के कीड़े हैं, यह गति है हमारी। तुम आसमानी सफर करते हो। तुम वह Mouthpiece of God हो (प्रभु तुम्हारे द्वारा बोलता है) सत्य का इजहार जहां से हो रहा है। सत्य की धारा बह रही है। कहते हैं अगर पास बिठा लो तो यह तुम्हारी तारीफ है। यह उसका विरद है। बच्चों को भी, अनजान बच्चों को भी तो पिता गोद में बिठा लेता है? अगर तुम हमको धक्के भी दो तो फिर भई तेरे सिवा और ठिकाना भी कहां है? कौन है? क्योंकि तुमको मिल चुका है, तुमको प्रभु ने मुझे भेजा है मिलाने को, अगर तुम धक्का भी दो तो और ठिकाना भी कहां है? इसीलिये कहा-

द्वारे धनी के पड़े रहो धक्के धनी के खाय।

समर्थ पुरुष के तरणों में बैठे रहो। जो वह धक्के भी दे तो कहां जायें। और जगह ठिकाना ही कौन है? तो महापुरुष अगर मिल जाये, प्रबल खाहिश हो, जो वह कहे उसके मुताबिक जीवन बनाओ। वह क्या कहता है? नेक-

पाक बनो पहला सवाल। Ethical life is stepping stone to spirituality (नेकपाक सदाचारी जीवन रूहानियत की सीढ़ी है), उसकी पहली तालीम यह है। वह यह कहता है दुनिया की मर्यादा पूरी करो, बकायदगी में रहो। इसमें रहते हुये, यहां के धर्म पूरे करते हुये अपना आखिरी फर्ज़ भी पूरा करो। तुम्हारी आत्मा भी है। आत्मा को प्रभु से जोड़ो। यह भी करो और वह भी करो। दोनों पहलू बकायदा Develop करो (दोनों लिहाज़ से उन्नति करो) ताकि दोनों हाथ लद्दू रहें। इस हाथ भी और उस हाथ भी।

लोक सुखिये परलोक सुहेले।

तो कहते हैं अगर वह पास बिठा ले तो उसकी दया समझो। वह हमारी लियाकत नहीं देखता। गलीज बच्चों को भी तो माता पास बैठाकर उन को धोती है, उनकी गन्दगी को साफ करती है। अगर झिङ्क भी ले तो क्या बात है। आखिर उसके सिवाय है भी कौन बच्चे का? इसी तरह जिसके अन्तर प्रबल खाहिश प्रभु को पाने की है, जो पा चुके हैं उनके चरणों में जाकर, अगर वह इज्जत मान प्यार करते हैं, तो यह उनकी दया है। ना भी करें तो हम अपनी तरफ नज़र मारकर देखो हम कितनी ग़लाज़त में भरे पढ़े हैं। उसका प्यार आत्मा से है। याद रखो तुम आत्मा हो। वह तुम्हारी आत्मा की जितनी ग़लाज़त हैं न इन्द्रियों के घाट की, बहर फैलाव की, इसको हटाना चाहता है। किसी वक्त प्यार से हटायेगा, किसी वक्त थोड़ी बेरुखी भी करेगा। उसको गर्ज यह नहीं कि नफरत करनी है, बल्कि इसको (शिष्य को) उस तरफ ध्यान दिलाने के लिये वह यह सब कुछ करता है, और कुछ नहीं।

(11) जे लोक सलाहे ता तेरी उपमा, जे निन्दे ता छोड़ न जाई॥

फरमाते हैं गुरु के तीन दर्जे हैं, एक तो गुरु वह जो जिसम रखता है, Pole इन्सानी है उस पर वह सत्य की धारी बह रही है। वह हम-जिंसियत (सहजातीयता) रखता है। इन्सान का उस्ताद इन्सान। वह दूसरों को समझाने के लिये पांधे (अध्यापक) का काम करता है। समझाता है, बुझाता है, हमर्दी करता है, इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाता है, अन्तर की ओँख खोलता है। यह गुरु का काम है। जब तुम अन्तर्मुख जाओ, इन्द्रियों के घाट के ऊपर, वह गुरदेव है, Radiant Form of the Master, नूरी स्वरूप। वह आपको मण्डल दर मण्डल ले जाता है। वह सदा सिख

(शिष्य) के अंग-संग रहता है। I shall never leave thee nor forsake thee till the end of the world. (मैं तुम्हें दुनिया की आखरियत तक नहीं छोड़ूँगा)। वह गुरु पद है। वह तुमको कभी नहीं छोड़ता। अगर आप उसके चरणों में जाओ, तुम छोड़ जाओ तो छोड़ जाओ, वह ताकत नहीं छोड़ती, जब तक आपको धुरधाम न पहुंचा ले। और आखिरी Stage (दर्जा) है- “सतगुरु रहे या भरपूरे।” वह परमात्मा के साथ इकमिक (अभेद) होकर सारी कायनात (सारी सृष्टि) में बस रहा है। Stages (दर्जे) हैं, एक ही Pole की तीन Stages (स्तर) है मगर जिनको जिसमानी Pole (अस्ति देह स्वरूप गुरु) नहीं मिला, अन्तर का Pole (पोल) मिल नहीं सकता। सवाल बड़ा मोटा है। इसमें (देहधारी गुरु) में तीनों चीजें हैं। कभी किसी Stage पर कभी किसी Stage पर काम करता है। तो फ़रमा रहे हैं कि सतगुरु में वह सत्स्वरूप को देख रहा है। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं, अगर कहते हैं, हमारी कोई उपमा करे, तो यह आपकी उपमा है, परमात्मा की उपमा है। एक लड़का बड़ा लायक बन गया, उसका Credit (श्रेय) किसको है? उसके उस्ताद को है कि नहीं? अगर सिख (शिष्य) एक लायक बन गया तो उसकी उपमा गुरु को है। उसने बनाया। बनाने वाले का सवाल है, नहीं तो-

हम नीच ते उत्तम भये।

आता है गुरुबाणी में कि हम भटक रहे थे, किसी को पता नहीं था-

हम रुलते फिरते कोई बात न पूछता, सतगुरु कीरे हम थापे॥

उसकी दया से बन रहे हैं। अगर यह Credit है तो उसी को है। मैं जब West (पश्चिम) में गया, Talks (भाषण) दी, तो उनको मैंने कहा- Well, all this credit goes to my Master in India, कि जिसके चरणों में बैठना मुझे नसीब हुआ मुझे इस बात की सूझत हुई उसको Credit है, शुक्राना है, कुदरती बात है। कहते हैं अगर उपमा अगर हो तो यह तेरी ही उपमा है, हे प्रभु! अगर हमें कोई बुरा कहे, फलानी जगह तुम क्यों जाते हो, लोग बुरा कहते हैं तो कहने दो। उन बेचारों की आँख नहीं खुली। “कोई अच्छा कहो भावें बुरा कहो।” तुम देख रहे हो, हकीकत को पा रहे हो। किस लिये तुम जो रहे हो? जो चीज तुमको मिलती है उसके लिये। जो उस ख्याल के नहीं होंगे, वह तुमको बुरा कहेंगे, कायदे की बात है। मुर्गी होती है। उसके

नीचे अण्डे सेये जाते हैं बतख के भी और मुर्गी के भी । बच्चे पैदा हो जाते हैं। चलते-फिरते हैं इकड़े। जब पानी का किनारा आता है न, बतख में कुदरती प्यार है न पानी का, तो बतख के बच्चे छलांग मारते हैं। उनको तो एक चीज मिल गई, जीवन आधार, और वह मुर्गी और उसके बच्चे क्या करते हैं? टणै-टणै करते हैं, हाय रुड़ गये। बह गये, ढूब गये, मारे गये। वे भी हमदर्दी करते हैं। अरे भई जिन इन्सानों के अन्तर प्रभु के मिलने की प्रबल खाहिश है, जब उनको कोई सतस्वरूप हस्ती मिलती है, वह उसके चरणों में बैठ जाते हैं। घरवाले कहते हैं, अकल मारी गई। क्या हो गया? वे अपनी तरफ से तो बड़ी हमदर्दी करते हैं। तो कहते हैं लोग बुरा भी कहें, उन बेचारों की आँख नहीं खुली।

हज़रत इब्राहीम थे। एक बार दजला दरिया में एक बेड़ी में जा रहे ते। उसमे^{एक धनाढ़ी} अमीर आदमी भी था। कई होते हैं न, दिल खुश करने के लिए साथ में वे नकलें कर रहे थे। ये (हज़रत इब्राहीम) चुपचाप बैठे थे। बाकी सब हंस कूद रहे थे। तो उन्होंने देखा एक नया ही किस्म का आदमी है। उन्होंने उनकी नकलें उतारनी शुरू कर दीं। तो हज़रत इब्राहीम साहब लिखते हैं कि मुझे बशारत (दिव्यवाणी) हुई। खुदा ने कहा, देख तेरी निरादरी मुझको मन्जूर नहीं है, अगर तू कहे तो इस बेड़ी को उलट दिया जाये। कहने लगे कि हे खुदा! इन बेचारों का क्या कसूर है? इनकी वह आँख नहीं बनी जिससे इन को कुछ नज़र आये। आप इतने ही दयाल हो तो इनकी आँख खोल दो। जब आँख खुली तो वही आकर मुआफी मांगने लगे। तो वे बेचारे हमदर्दी करते हैं। जो निन्दा नहीं करते वह कहते हैं अरे भई यह किसी तरफ जा रहा है। वे समझते हैं कि यह गया। बतख के बच्चों ने समझा हमारा पानी आ गया, जीवन आधार। कहते हैं अगर लोग बुरा भी कहें तो भई हम दर छोड़ने के नहीं। अच्छा कहें तो तुम्हारा उपमा है, तेरी कृपा से हुआ।

(12) जे तुध बल रहे ता कोई क्या आँखु तुध विसरिये मर जाई॥

सवाल तेरी साथ बनने का है, “तेरी नाल गुरादे बण आवे।” जो लफ्ज आता है न, जगह-जगह शब्द में कि अनुभवी पुरुष के साथ बन आने से जीवन आधार है। अगर तेरी तरफ तवज्जो हमारी रहे, तो को क्या, जो मर्जी आये कह ले। हमारे तो उस प्रभु से जुड़ने का सवाल है। हमें जीवन आधार चीज़

मिल रही है। एक सवाल है, बच्चे को दूध मिल रहा है। उसको माता से सवाल है, दूध जहां से मिल रहा है। अगर दुनिया के लोगों को नहीं पता तो उनकी किस्मत रही। तो कहते हैं कोई क्या कहेगा। “तुध बिसरिये मर जाई॥” कि हे सतस्वरूप हस्ती! जब तू बिसरता है तो मौत आ जाती है।

आखाँ जीवां बिसरे मर जाओ॥

वह जिसमानी पोल को नहीं देखता। एक जगह Electric Fitting(बिजली फिट) हो रही है, बल्कि हैं बड़े। उनमें जो Light (रोशनी) हो रही है, उसको देखते हो तो वह शीशे का खोल नज़र नहीं आता, Light पर नज़र रहती है। जिनकी आँख खुलती है- वही पहले इन्सानों की तरह उनको इन्सान समझते हैं, मगर जब आँख खुलती है तो कहते हैं, “मौला आदमी बण आया।” गुरु अर्जुन साहब ने गुरु रामदास जी के मुतल्किक क्या फरमाया-

हर जियो नाम परयो राम दास।

यह रामदास इन्सान नहीं है। यह हरि का नाम है, हरि ही चलता फिरता है। पर सवाल तो यह है, जिनकी आँख खुली, बाकियों का तो सवाल नहीं।

(13) वारि-वारि जाई गुर ऊपर पै पैरी सन्त मनाई॥

कहते हैं बार-बार मैं तुझ पर, गुरु पूरे गुरु पर, अधूरे गुरु का सवाल नहीं। पूरा गुरु एम.ए. पास With Commission, जो सन्त पदवी को पा चुका है। सन्त किसको कहते हैं ?

हमरो भरता बड़ो विवेकी आपे सन्त कहावे॥

हमारा भरता (पति) बड़ा विवेकवान है। जब वह कहीं प्रकट होता है, उसको सन्त कहते हैं। और उसने सन्त पदवी को पाकर वह गुरु पद पाया है। तो कहते हैं कि हे पूरे सत्गुरु! हम बार-बार तुझ पर कुरबान हैं, जिसने हमको प्रभु से मिलाया है।

(14) नानक विचारा भया दिवाना, हर तौ दर्शन के ताई॥

कहते हैं कि परमात्मा, हम तेरे दीदार के आशित हैं। बस! हम दीवाने हो रहे हैं, पागल हो रहे हैं तुझको पाने के लिये, ताकि तेरे दर्शन नसीब हों। इसलिये जिसके अन्तर तू इजहार कर रहा है, जो मिलाने वाला है उसे मिला दे। हम हर तरह कुर्बानी करने को तैयार हैं।

अज सरे बलीने मन बरखेज ऐ नादां तबीब।

खुसरो साहब कहते हैं जब बीमार पड़े, बीमारी काहे की ख्याल अन्तर था। बाहर की तरफचित्त-वृत्ति हटती है। तो घर वालों ने तबीब (डॉक्टर) को बुलाया। बैठा है सिरहाने। कहते हैं तू उठ जा मेरे सिरहाने से, ऐ नादां तबीब! तू मेरे सिरहाने से उठ जा।

दर्दमन्दां इश्क रा दारू बजु़ज दीदार नेस्त।

हमें तो चाहिये उसके दर्शन। और भई तू क्या देखेगा। गुरु नानक साहब ने भी इसी हालत का बयान किया। फरमाया -

वैद बुलाया वैदगी पकड़ ढंगोले बाहि॥
भोला वैद ना जाणई करक करेजे माहिं॥

वाकेया बयान करते हैं जब पड़े थे बीमार। तीर्थ-यात्रा से वापस आये और लगन जबरदस्त हुई। घड़वालों ने देखा, इकलौता बेटा है तो उन्होंने वैद को बुला लिया। कहते हैं वह आया। मेरी नब्ज़े टटोलता है। कहते हैं भोले वैद, तुझको पता नहीं यह तो बीमारी अन्तर कलेजे में लगी पड़ी है। तू क्या ढूँढ़ता है। फिर कहा- “जा वैदा घर अपणे।” जाओ अपने घर, यहां तुम्हें क्या मिलता है। हम तो उसके शौह (प्रीतम) के प्यार में रत रहे हैं। तो सवाल तो पाने का है न, कि हे प्रभु, हम तुझको पाना चाहते हैं, तू जिस पर इजहार कर रहा है, तू सत्स्वरूप पोल पर इजहार करता है, वह मिला। वह जो कहे तेरे मिलाने के लिये, वह हर तरह से कुर्बानी करने को तैयार है। लोग कहते हैं, ये सिर्फ गुरु के पुजारी हैं। नहीं भाई, हकीकित के पुजारी हैं। जिन्होंने पाया है उनका एहसान सिर पर है। बात तो यह है। शुक्राना है, जो मिला दे।

(15) इक्खड़ इांगी मेहों बरसे, भी धूर देखण जाई॥

कहते हैं बड़ी अन्धेरी चल रही है, बारिश होरही है, कोई फिक्र नहीं है। दिल उमंगता है जाने को। किसके पास? जिसके अन्तर वह इजहार कर रहा है। उसके मिलने से ठंडक मिलती है, शान्ति मिलती है। कई लोग कहते हैं, क्यों बार-बार तुम महात्मा के पास जाते हो। और भई वहां जाकर आत्मा को उभार मिलता है। एक दिन में एम.ए. पास नहीं होता। Time Factor is necessary (वक्त लगता है)। जो उसके मंडल में चार्जिंग है न, उसके दर्शन से जो Reaction (प्रतिक्रिया) होती है, उस ठंडक के पाने के लिये। इसलिये चाहे बारिश हो, कोई फिक्र नहीं। अन्धेरी हो, कोई फिक्र नहीं। ‘‘भी गुरु

"देखण जाई।" ऐसे अनुभवी पुरुष जिसके अन्तर वह इजहार करता है, उसके देखने जायेंगे। जायेंगे, जूरे जायेंगे। दुनिया में देखो, मुआफ करना दुनियावी मिसाल है, कि महीवाल थे, सोहनी थी। वह मिलने जाया करती थी। कच्चा घड़ा था। बदल दिया गया। इसलिये कि यह मर जाये तो अच्छा है, बदनामी न हो। देखा कच्चा घड़ा है। कहने लगी, अच्छा भई, यह तो फिर धब्बा लगता है प्रेम को। कच्चे घड़े को, इस बात को जानते हुये कि मौत आयेगी, गई। तो मेरे अर्ज करने का मतलब है कि दुनिया के लिये इतना कुछ है, प्रभु के लिये, जिसके अन्तर रुह में एक लगन समा गई है, उसके लिये क्या कुछ करेगा! कहते हैं बारिश हो, अन्धेरी हो, कोई फिक्र की बात नहीं। "भी गुर देखण जाई।" ऐसी हस्ती जिस के पोल पर वह इजहार कर रहा है, उसका देखना हरि को देखना है। मौलाना रूम साहब ने कहा, अगर तुम किसी वली अल्लाह के नजदीक आ गये, समझो तुम परमात्मा के नजदीक आ गये। जब किसी वली अल्लाह के नजदीक आ गये, समझो तुम परमात्मा के नजदीक आ गये। जब किसी वली अल्लाह से दूर हो गये, समझो परमात्मा से दूर हो गये। अगर तुम किसी स्विच के पास आ गये, जो पावर हाऊस से Contacted (जुड़ा हुआ) है, और भई तुम पावर हाऊस के पास आ गये। उससे दूरी पावर हाऊस से दूरी है स्विच से तुम्हारे सारे काम निकल सकते हैं। आप अगर समुद्र के घाट पर आ गये, तो समुद्र ही पर आ गये। समझो! घाट समुद्र ही का है। तो जिस पोल पर वह इजहार कर रहा है उसके पास जाना, उससे Contact करना (जुड़ना) उस पावर जिसका उसमें इजहार है, तो उसके साथ Contact करना है। इसलिये हम तो कहते हैं, भई बार-बार दर्शनों को जायेंगे, बारिश हो कोई फिक्र नहीं, अन्धेरी झाकखड़ चले कोई फिक्र नहीं।

(16) समुन्द्र सागर होवे बहु खारा, गुर सिख लंघ गुर पै जाई॥

कहते हैं समुद्र हो, ठाठें मारता हो, फिर भी जो गुर सिख है न, वह जरूर गुर को मिलने जायेगा। किसलिये? उस ठंडक के पाने के लिये जो वहां से मिलती है, उभार मिलता है। जैसे बच्चे को माता दूध पिलाकर बड़ा करती है न, तो अनुभवी पुरुष के बार-बार दर्शनों से दो किस्म के फायदे होते हैं। एक तो उसका जीवन नेक पाक और साफ और पवित्र है-

काम क्रोध परसे जे नाहिन ते मूरत भगवाना।

जिसके अन्तर काम और क्रोध के, ईर्षा और द्वेष के बेग नहीं चले, वह भगवान की मूरत है। उसके दर्शन करने से विषय-वासना दूर होती है, Reaction (प्रतिक्रिया) होता है, Unravelment होती है कहो। दूसरे उस मण्डल में चार्जिंग हो रही है, सत्य की धारा बह रही है। तुमको ठण्डक और शान्ति मिलेगी। इसलिये हम जायेंगे। जो गुरु-सिख है वह तो जायेगा। जो मन का सिख है उसकी अलहदा बात रही। यह बतलाई है उन लोगों की कैफियत (अवस्था) जिनके अन्तर प्रभु के पाने की प्रबल इच्छा है। प्रभु का अगर प्रबल प्यार और इच्छा है तो जिन्होंने पाया है उनके लिये भी प्यार और इच्छा है। कायदे की बात है।

(17) ज्यों प्राणी जल बिन है मरता, त्यों सिख गुर बिन मर जाई॥

उसकी आत्मा का आधार है बना हुआ। जैसे मछली का आधार पानी है, पानी तरह सिख का जीवन आधार गुरु है। गुरु इन्सान नहीं फिर मैं अर्ज करूँ जिसमें जिस्मानियत का सवाल नहीं। जिस पोल पर वह Higher Power (प्रभु की सत्ता) काम करती है उसका एक दृश्य, एक झालक, एक नजर वह जीवन देने वाली है। उस मण्डल में चार्जिंग सत्य की, सत्संग है। वहां सत्य की धारा बह रही है। वह कट्रोलिंग पावर है, ठंडक देने वाली है। जो हवा आग से लगकर आयेगी वह गर्मी देगी, जो हवा बर्फ से लगकर आयेगी ठंडक देगी। जिस हृदय में शान्ति, ठंडक नशा, श्रूर, आनंद है, इजहार हो रहा है सत्य धारा का, उसके पास बैठने से तुमको भी ठंडक और शांति मिलेगी। बात तो यह है। कितने ताकीदी लफ्ज हैं। अनुभवी पुरुषों के कलाम हैं। अपना इजहार, सत्संग की महिमा प्रभु पाने की प्रबल खाहिश कैसी होनी चाहिये, ये उसका जिक्र कर रहे हैं। उस्ताद है न, जब बच्चे को पढ़ाता है तो खुद कहता है, कहो क, कहो ख, इसका यह मतलब नहीं कि वह क, ख, नहीं जानता। जानता है। मगर हमें साथ साथ पढ़ाना चाहता है। तो यह सारी कैफियत ऐसी न बने तो सिख, सिख कहां।

(18) ज्यों धरती सोभ करे जल बरसे, त्यों सिख गुर मिल बिगसाई॥

कहते हैं जैसे धरती पर बारिश हो तो वह प्रफुल्लित हो जाती है, ऐसे ही सिख की नज़र जब गुरु पर पड़ती है तो बाग-बाग हो जाता है। समझो! हजूर

| one line

(बाबा सावन सिंह जी महाराज) थे। बड़ी भीड़-भाड़ में दूर से उनकी पगड़ी जरा ऊँची नज़र आती थी न, एक ठंडकी^(Receptive) की रै चल जाती थी। चार्जिंग है भई। होने का सवाल है। फिर देखो क्या नशा मिलता है। वहां सवाल तो यह है, जिसकी लगन हो न उसकी कोई बात भी सुना दे न, तो भी एक ठंडक की रै चल जाती है। कहीं देखने में नज़र आ जाये, कहीं लात, बाजू, सिर, कोई भी हिस्सा और अगर टू-बूटू (आमने-सामने) आ बैठे तो क्या रंग और नशा आता है? सवाल तो यह है। जिसकी आत्मा का आधार प्रभु का इजहार हो रहा है, वह एक नये नशे को, हररोज नये से नया नशा पाता है। बाहू साहब ने कहा कि जितनी मेरे जिस्म की रोयें हैं, लूयें हैं, अगर ये सब आँखें बन जायें और इन सब आँखों से मैं मुर्शिद (गुरु) को देखूँ, "तो भी देख ना रज्जां हूँ।" फिर भी रज्ज नहीं आती। हर दम एक नये से नया रंग आता है। समझे! नशा आता है। मौलाना रूम साहब ने कहा—अपना तरीका बयान है वे कहते हैं, जैसे एक शराबी को एक प्याले छलकती शराब देखने में आये तो क्या रंग उसको आता है। कहते हैं ऐसे ही सिख (शिष्य) को गुरु को देखकर नशा चढ़ता है। मिसालें हैं, समझाने के तरीके हैं। उनके लिये भाई जो गुरु को कुछ अपने असल रंग में देख रहे हैं। आजकल गुरुदम क्यों बदनाम है? जो इस समर्था के मालिक नहीं है, Acting और Posing (स्वांग) कर रहे हैं, हकीकत को नहीं पाया, जाहिर स्वांग बन रहे हैं, जो भाई तलाश की खातिर आते हैं, हर एक तरह की कुर्बानी करते हैं, उनकी कुर्बानी में कई शक नहीं है। जब कुछ मुद्दत के बाद देखते हैं वह वैसे ही मन इन्द्रियों के घाट के गुलाम हैं जैसे हम हैं तो कहते हैं It is all Gurudom, आये दिन रोज अखबरों में खबरें आती रहती हैं। आडम्बर बनाते हैं, प्रचार करते हैं, दस-बीस ग्रन्दमी रख लिये, रूपया खर्च किया। इधर-उधर करके, दस-बीस हजार पीछे लगे, जब करतूत जाहिर हुई तो कैदखाने में चले गये। ऐसे लोगों को देख-देखकर दुनिया साधु-सन्तों के नाम से मुतलफ़र (नफ़रत करती) है मगर सच्चे महात्मा की यह तारीफ (परिभाषा) है। उसके बगैर कल्याण नहीं।

(19) सेवक का होय सेवक वरता, कर कर बिनौं बुलाई॥

कहते हैं, हे परमात्मा, हे सत्युरु! जिस पोल पर वह सत्य इजहार कर रहा है, जो तेरा सेवक है- सेवक की तारीफ क्या की है?

गुर के ग्रह सेवक जो रहे॥ गुर की आज्ञा मन में सहे॥
 just आपस को कर कुछ ना ज़ावे॥ हर हर नाम रिदे सद ध्यावे॥ just
 मन बेचे सतगुर के पास॥ तिस सेवक के कारज रास॥

इसका नाम है सेवा। कहते हैं सेवक का भी सेवक अगर मिल जाये, तो उसको कहता हूँ भाई मेरी विनती को सुन ले।

जो दीसे गुर सिखड़ा तिस निव निव लागां पाये जियो॥ देये

आखाँ बिरथा जिया की, मोहे सज्जण दीयो मिलाये जियो॥

भई हम तो उसी के चाहने वाले हैं न, कि वह प्रभु मिले। जो मिला है, उसके सेवकों के सेवक के हम गोलों के गोले (चाकरों के चाकर) होने को तैयार हैं। किस गर्ज के लिये? हरि को पाने के लिये। यह Means to end है क्योंकि इसके सिवाय मिलता नहीं है। जिसने पाया है वही दे सकेगा। वह आपको तजरबा देगा, First hand Experience देगा। यही उसकी बड़ाई है। लेक्चर देना, कथा करना, ज्ञान करना, किताबें लिखना यह कोई भाई भी कर सकता है। आप में से कोई कर सकता है। थोड़ी देर ट्रेनिंग करो, लेक्चर करने लग जाओगे। यह देखने का सवाल है, अनुभवी पुरुषों की महिमा है।

(20) नानक की बेनंती हरपे, गुर मिल गुर सुख पाई॥

कहते हैं कि हे प्रभु, हे परमात्मा! मेरी यही विनती है कि मुझे गुर से मिला दे। उससे मिलने से मुझे वह सुख और शान्ति मिलती है जो तुझको मिलने से हो सकती है। तेरे मिलने का जरिया है यह कह दो, Means to an end है। मगर जो पोल मैंने पहले अर्ज किया न, जो हाथ उठाने के लिये आया है न, वह आगे है।

गुरु गोविन्द दोनों खड़े किसके लागूं पाय।

बलिहारी गुरु आपने जिन सतगुरु दियो बताये॥

बात तो यह है। जो सामने जिस पोल में इजहार करता है।

मौला आदमी बण आया।

फिर वही, इन्सान नहीं, इन्सान का मौला बनता नज़र आ जाता है। वह आँख बन जाती है न। उसी में अन्तर उसका इजहार होने लगता है। वह उसका, शीशे का, इजहार नहीं करता है। उसमें जो लाइट है, उसको देखने लगता है। आगे उन देखने वालों की थोड़ी कैफियत बयान करेंगे।

(21) तू आपे गुर चेला है आपे, गुर विचदे तुझे धियाई॥

कहते हैं तू सब के अन्तर है। गुर के अन्तर भी है, चेले के अन्तर भी है। कोई हृदय उससे खाली नहीं है। कहते हैं हमगुरु के पास क्यों जाते हैं? तू वहां प्रकट है, उसके अन्तर से हम तुझको देख रहे हैं। "गुर दे बिच भी तुझे धियाई।" हम गुरु को देखते हैं, उसके जिस्म को नहीं, उसके अन्तर जो तू प्रकट है न, उसको देख रहे हैं। वह तेरी ही महिमा गा रहे हैं। गुरु भक्ति खुदा परस्ती है, मुर्शिद परस्ती (गुरु की पूजा) हकीकत परस्ती है। खुसरो को लोगों ने कहा कि भाई देख तू बुत परस्त बन गया। कहने लगे बुत परस्त बन गया, अच्छा भई बुत परस्त ही सही॥

खलक भी ग्रोयद कि खुसरो बुत परस्ती मी कुनद।

उनमें कितना प्यार था। खुसरो जा रहे थे, निजामुद्दीन औलिया के तालिब (शिष्य) थे। उधर से एक आदमी आ रहा था जिसकी लड़की की शादी होनी थी। उनके यहां गया कि महाराज मेरी लड़की की शादी है, मेरी कुछ मदद हो जाये। उन्होंने कहा, "अच्छा भई ठहर जाओ, जो कुछ आयेगा तुम्हें दे दूंगा।" दो - तीन दिन रहा, कोई भी नहीं आया। यह फ़कीरों का क्या, जो आया आ गया। जो आया दे दिया, लगा दिया। फिर जो आये, चलो ले जाओ। आखिर कहने लगा कि महाराज मेरी लड़की की तो शादी आं गई, आप जल्दी करें। कहने लगे, "अच्छा भई ऐसा करो, जूता मेरा है॥" उठाया और दे दिया, यह, तो कहीं बेच लेना।" अब देखिये, हर एक चीज की चार्जिंग होती है। जो आप कपड़ा पहन रहे हो न, तुम्हारे अन्तर जो है, उसकी भी उसमें होगी। वैसे ही खुशबू, वैसी ही हालत होगी। तो वह जूते लिये जा रहा था। अपनी किस्मत को कोस रहा था भई जूते भी टूटे हुये मिले। क्या होगा। रास्ते में जाते आगे खुसरो आ रहे थे, कई ऊंटों की कतार थी। दो-तीन प्रबाल बच्चे थे बाकी सामान था लदा हुआ। उनको खुशबू आई उस तरफ से। किसकी? मुर्शिद (गुरु) की! उनका बरता हुआ जूता था न। वह आदमी जाता जाये, उस तरफ गया तो उस तरफ खुशबू आने लगी। यह राज (भेद) की बाद है। उसको बुलाया, "भई तुम कहां से आ रहे हो?" कहने लगा, "मैं निजामुद्दीन औलिया के यहां गया था।" "अच्छा भई, क्या बात थी।" सारी बात सुनाई। कहने लगे, "अच्छा यह इस जूते की कीमत तो मेरे पास नहीं, अगर तू नज़राना कबूल कर ले तो तेरी बड़ी

मेहरबानी है।” क्या किया, बच्चों के जो ऊंट थे, वे बीच से हटा लिये, बाकी सब समान लदा हुआ उसके हवाले किया। यह नज़राने में था। समझे! जब गये, जूता झाड़ कर रख दिया। पूछा (हजरत निजामुद्दीन ने), “भई कितने पर खरीदा?” कहने लगे, “नहीं महाराज, खरीदा नहीं है, नज़राना सिफ़्र दिया है, जो था मेरे पास।” कहने लगे, “बड़ा सस्ता लिया।” तो लगन की बात है। वह कहने लगे कि अरे भई-

खल्फ मी गोयद के खुसरो बुतपरस्ती मी कुनंद
अर्थात् लोग कहते हैं यह बुत परस्त हो गया, कहते हैं -

आरे आरे मो कुनम बाखलको आलम कार नेस्त।

भई बुत परस्त तो बुत परस्त ही सही, मैं तो हकीकत परस्त हूँ। ये अनुभवी पुरुषों की कहानियां हैं। जिसके इतना कुछ दुनिया में फैज़ मिले उसका इंसान क्या कुछ बन जाता है, भाई जिससे रूहानी फैज़ (लाभ) मिले, अनुभव मिले, उनका कितना शुक्राना होगा? मौलाना रूम साहब ने एक जगह कहा कि मैंने-

काबा में गरदीद बरसरे कूये यक बुते।

कि एक बुत रहता था एक गली में, इन्सातन। उसकी गली के इस तरफ काबा, खुदा का घर परिक्रमा कर रहा था-

या खुदा ई बुतेस्त या बलाओ आफ़ते॥

यह कैसा बुत है भई जिसकी गली, जिसमें वह रहता है उसकी इस तरफ खुदा का घर भी परिक्रमा कार रहा है। या बला है या कोई आफ़त है। तो इसीलिये कहा कि गुरु के हाथ में परमात्मा का हाथ है-

दस्ते तो दस्ते खुदा, चश्मे तो मस्ते खुदा।

उसकी आँखों में वह नशा है जो परमात्मा में है। उसके हाथ में प्रधु का हाथ है। वह और नहीं, मगर अँख खुलने का सवाल है। जो जुङा है, जो एक रूप है उससे वहीं तुमको दिखा सकता है। बात तो यह है। उसका नाम तुम कुछ रख लो।

(22) जो तुध सेव सो तूहे होव, तुध सेवक पैज रखाई॥

कहते हैं हे सत्युरु, हे मालिक, हे हरि, जो सत्युरु के स्वरूप के स्वरूप पर तू है, जो तेरे सेवने वाले हैं वे पोल को नहीं उसके अन्तर तुझको ध्या रहे

हैं, वे तेरा ही रूप बनेंगे। As you think so you become "जो तुध से तुध ही होवे।" कहते हैं तू सेवक की पैज (लाज) रखने वाला है। जो तेरे दर पर आ गिरे तेरी तलाश में, आखिर तूने ही लाज रखनी है। यह तेरा बिरद है। कितने दो नुकतों को खोल खोलकर समझा रहे हैं गुरु और परमात्मा को-

(23) भंडार भरे भक्ति हर तेरे जिस भावे⁶ तिस देवाई॥

कहते हैं हे परमात्मा तेरे दर पर भक्ति के भण्डार भरे पढ़े हैं। जिसको तू चाहे दिला दे उस पोल के द्वारा, जिस पर तू काम कर रहा है। देने वाला तो वही है न, मगर जो Selected पुरुष है, जिसमें है प्रभु प्रकट है और काम करता है, वही दे तो दे। गुरु⁶ बाणी में आया है :

धुर खसमे का हुकम प्रया, बिन सतगुर चेतेया न जाये॥

यह Fundamental (पक्का) असूल बना है कि जो सतस्वरूप हस्ती है, उसी से उस (प्रभु) का इजहार (झलक) नज़र आ सकता है। वह हमारी तरह हम-जिन्सियत (सहजातीयता) रखता है। हमदर्दी करके इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाने का तजरबा देता है, अन्तर का राज खोलता है। कहते हैं यह असूल बना है। यही Christ (ईसा) ने कहा- Father knows the son and son knows the Father and the others whom the son reveals. परमात्मा अपने बच्चे को जानता है, और बच्चा परमात्मा को जानता है, बाकी लोग उस परमात्मा को कैसे जान सकते हैं? जिन पर बच्चा इजहार करे। सब महापुरुष एक बात कहते हैं। यही भगवान कृष्ण जी ने गीता में फ़रमाया। अपनी-अपनी जगह सबने यही बात कही है। यही तरीका है। कहते हैं वह माया में लिपटी हालत में मेरे राज (भेद) को नहीं देख सकते। कौन देख सकते हैं? "तुम मुझको इन चमड़े की आँखों से नहीं देख सकते, बल्कि उस दिव्य-चक्षु से जो मैंने तुमको बख्शी है।" गुरु की हैसियत में फरमा रहे हैं अर्जुन से। 'सौ सियाने एक ही मत। जो Fact (सच) है वह Fact ही है।

(24) जिस तूं दे सोई जन पाये, होर नेहफल सब चतुराई॥

कहते हैं जिसको हे परमात्मा, हे हरि, तू देना चाहता है, वही तुझको पा सकता है। बाकी चतुराई की बातें सब फ़जूल हैं। जो कहते हैं मैं अपने आप पा लेता हूं, पाकर देख लैं, आखिर हारेंगे। जो इन्द्रियों के घाट का रूप बना बैठा है, अपने आपको भूल चुका है और वह, वे साधन कर रहा है, जिनका

तालूक इन्द्रियों के घाट से है, सारी उम्र करता रहे, नहीं पा सकता है। वह अदृष्ट और अगोचर है।

एवड ऊचा होवे॥ तिस ऊचे को जाणे सोय॥

मगर जिस्म जिस्मानियत से ऊपर आना है, कौन लाये-

खैंचे सुरत गुरूल बलवान।

जो खैंच कर ऊपर ले आये, यह समर्था रखता है। उसमें तेरी ही ताकत काम कर रही है जो खैंचने वाली है। भई इसके बगैर तो मिला नहीं। बाकी सब फ़जूल चतुराई की बातें जितनी मर्जी तुम कर लो। दुनिया में देखिये न, बड़ी मोटी बात, दुनिया का कोई काम सीखना हो, मामूली से मामूली, उसके माहिर के पास जाते हो। अरे भई जिनका **तालूक** इन्द्रियों के घाट से है, वे काम भी सिवाय उसके माहिर के हम नहीं हासिल कर सकते हैं। अरे भई ऐसा काम जिसका **तालूक** इन्द्रियों के घाट से ऊपर आकर है वह बगैर किसी आमिल के कैसे तुम कर सकते हो? अगर कोई साहब पा**स**कता है तो बड़ी खुशी से वह पाये मगर पा नहीं सकेगा।

फिर घर आये गुरमुख वत्थ पावणेयां॥

फिर टक्करें मारकर किसी गुरमुख के पास जाना पड़ेगा।

गुरमुख कोट उभार-दा दे नावें इक कणी॥

हम आजकल हर एक को कहते हैं, गुरमुख है। भई गुरमुख की तारीख यही है, “जो गुर सेती सनमुख हो”, जो अनुभवी पुरुष के समुख बैठा हो, उसका नाम है गुरमुख। गुरु अमरदास जी साहब ने तारीफ़ फरमाई यह। देखा ही नहीं, फिर गुरमुख कहां? गुरमुख की बड़ी महिमा गाई है।

गुरमुख कोट उधारदा दे नावें इक कणी॥

उसका एक तवज्जो का उभार नाम के साथ जोड़ता है, इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाता है, अनेकों जीवों का उद्धार करता है। जो खुद आप ही इन्द्रियों के घाट पर बैठा है, अरे भई तुम को ऊपर कैसे ला सकता है?

(25) सिमर सिमर सिमर गुर अपणा, सोया मन जागाई॥

कहते हैं अनुभवी पुरुष को सुमिरन करने से, याद करने से, As you think so you become (जिसका विन्तन करोगे उसका रूप बनोगे) मन के घाट पर हमारी आत्मा जो जन्मों-जन्मों से सो रही है, यह जाग उठती है।

वह पोल जिस पर वह (प्रभु) इजहार कर रहा है, जिसकी आत्मा मन इन्द्रियों से आज्ञाद है उसको बार-बार याद करने से, "साहिब आवे याद!"

साधु के संग में साहिब आवे याद।

नर्मी कहां मिलती है? जहां धास-फूस हो। सब्जी^(खेलती) पर उसका इजहार (प्रकटावा) सुबह के वक्त होता है। अरे भई प्रभु कहां बसता है? भक्तों के दिलों में। उनके मण्डल में बैठने से ठंडक मिलती है। सत्संग उसी की महिमा की है, जहां पर कोई सत्स्वरूप हस्ती बैठी है।

जह सतगुर तहं सत संगत बणाई॥

जहां कोई सत्स्वरूप हस्ती, अनुभवी पुरुष बैठा है, उस मण्डल का नाम सतसंगत है। उस का Criterion (कसौटी) क्या है?

जिथे इक्षो नाम ब्रखाणिये।

सिवाय नाम की महिमा के और कोई बात नहीं वहां, न पोलिटीकल झगड़े हैं, न सामाजिक झगड़े। यह सत्संग की महिमा है। जहां पर एक अनुभवी पुरुष है, उस सारे मण्डल का नाम सत्संग है। सबके लिये ठण्डक की उसमें धारा बह रही है।

(26) इक दान मंगे नानक वेचारा, हर दासन दास कराई॥

अब गुरु अर्जुन साहब कहते हैं, हम एक ही दान, हे हरि आपसे मांग रहे हैं। जो तेरे दास हैं उनका हमें दास बना लो।

रामा हम दासन दास करीजै॥

हे राम, हमें अपने दासों का दास बना लो। कहते हैं कब तक? कहते हैं जब तक इस जिस्म में, इस खलड़ी में स्वास चलता रहे, अंतिम स्वास उन्हीं की गोद में निकले। समझो! यह कैसा दान है? फरमाते हैं गुरु रामदास जी साहब कि जो सबसे अकलमन्द हुये हैं न, वे सब भी यही मांगते रहे। जो शिरोमणी भक्त-भक्तों के थे, नारद, वे भी यही मांगते गये और शेषनाग भी यही मांगता रहा। यह बड़ी ऊँची दात है। रात के वक्त जो सिख भाइयों में कीर्तन सोहला है, उसकी आखिरी तुक देखिये क्या है-

नानक दास एही सुख माँगे, मोको कर सन्तन की धूरे॥

अगर आज हम सन्तों की धूड़ी से नफरत करते हैं। अरे भई इसमें कोई शक नहीं आदमी Overcautious हो जाता है। जब धोखा जाता है, तो कहता

है ये सब एक ही जैसे हैं। मगर सचमुच महात्मा के बगैर गति नहीं है। सिख भाइयों में जो अरदास जाती है न, प्रार्थना है, वह क्या कहते हैं -

गुरमुख का मेल साध का संग नाम का रंग ॥

सेई प्यारेया मेल जिन्हा मिलेयां तेरा नाम चित्त आवे॥

जिन्दगी का सवाल है। जिन्दगी से जिन्दगी मिलेगी।

(27) जे गुर झिङ्के ता मीठा लागे जे बख्शो ता गुर वडियाई॥

कहते हैं अगर वह झिङ्कता है तो सिख का दिल उस चीज़ की तरफ है जो वह देना चाहता है। क्यों झिङ्कता है? वह हमें कुछ बनाना चाहता है, हम मानते नहीं उसको। फिर कहता है भई खबरदार, ऐसा मत करना। सिख वही है जिसको वह झिङ्कके तो वह झिङ्कना भी मीठा लगे। यह पहचान ही है सिख की। सिख कौन है? जो गुरसिख हुआ है। सिख तो सारा जहान ही है। दशम गुरु साहब से पूछा गया कि महाराज सिख की तारीफ कर दो तो फरमाया, “मेरी नजर में तो सारा जहान ही सिख है।” लोगों ने पूछा, “महाराज, वह कैसे?” कहने लगे, “जब से बच्चा पैदा होता है मरने तक वह शिक्षा ही धारण करता है। जो शिक्षा को धारण करे वह सिख है। हां गुरसिख बनना चाहिये।” गुरसिख किसी अनुभवी पुरुष के चरणों में बैठे। वह देखा ही नहीं तो गुरसिख कहां! अब गुरु क्या चाहता है? तुम उस्ताद के पास गये, लड़के को वह पढ़ाता है, सिरदर्दी करता है। तुम पढ़ते ही नहीं। वह झिङ्कता है। अगर तुम सच्चे शिष्य हो तो उसका झिङ्कना मीठा लगेगा। वह झिङ्कता क्यों है? क्योंकि तुम वह कुछ नहीं करते वह जो कुछ बनाना चाहता है तुमको। तो कहते हैं- “गुरु झिङ्के ताँ मीठा लागे, जे बख्शो ताँ तुध वडियाई।” कहते हैं वह झिङ्कके तो मीठा लगता है और अगर बख्श दे तो कहते हैं यह भी तेरी कृपा है। हाफिज साहब ने कहा कि-

लबे लाले शक्रर खारा ।

मिसाल देकर समझाते हैं, जैसे लाल होठों से जो चीज तलख भी लगे, उन होठों की खूबसूरती की तरफ जाओ, किन होठों से वे बातें निकल रही हैं। यह प्यार है, जिससे प्यार है, वह कई दफा गालियाँ निकालता है, बुरा मालूम होता है तुमको। अगर सिख और गुरु का प्यार है तो तुम्हारी बेहतरी के लिये बाज वर्त वह तुमको कुछ कहता है तो, उसका फ़र्ज़ है। न कहे तो तुम्हें

कौन कहे? आप बतायें? कौन कहे? जो खुद बह रहा है वह तो तुमको उसी तरफ ले जायेगा जिस तरफ तुम बह रहे हो, वह बह रहा है। तो कहते हैं यह निशानी है कि वह झिङ्के तो भी मीठा लगे, सिख सच्चा सिख वही है। उसका झिङ्कना तुम्हारी बेहतरी के लिये है। वह तुमको बनाना चाहता है। तुम बनते नहीं।

(२३) गुरमुख बोले सो थाये पाए मनमुख किछ थाये न पाई॥

जो गुरमुख बन गया उसकी गति है-

गुरमुख कोड उधारदा दे नावें इक कणा॥

वह जो कुछ भी कहेगा, तुम्हारे भले की बात कहेगा। वह सोच समझकर कहेगा। मनमुख किसको कहते हैं? इसकी तारीफ भी गुरु अमरदास जी साहब ने की है -

से मनमुख जो शब्द ना पछाणे॥ गुर के भय की सार न जाणे॥

वह मुख है जिनका उस नाम और शब्द के साथ Contact (संपर्क) नहीं आया, जो इन्द्रियों के घाट से ऊपर नहीं जाते, जिन्हें नाम का रस नहीं मिला। और गुरु मिला भी है तो उसके कहे पर फूल नहीं चढ़ा रहा, उसका भय दिल में नहीं बसा कि यह (गुरु) हमादान (सर्वत्यापक) है, दिल दिल की जानने वाला है। कहते हैं ऐसे लोग सारे मनमुख हैं। पुरुषों की बातें अगर तुम सुनोगे वह तुम्हें कहां ले जायेंगे? कहते हैं गुरमुख की बात को सुनो। वह तुम्हारी बेहतरी के लिये कहेगा। वह जो कहेगा उसकी खास मतलब है, सोच समझ कर कहता है। इसमें तुम्हारी बेहतरी है। अगर उसी से नाराज़गी हो तो तुम लोगे क्या? अपना नुकत्रीन करोगे। फिर भी वह आपको नहीं छोड़ेगा, तुम छोड़ जाओ तो छोड़ जाओ। हां बनने में देरी कर रहे हो।

(२४) पाला कक्षर वर्फ वरसे, गुरसिख गुर देखण जाई॥

ऊपर कई मिसालें दीं, और देते हैं। कहते हैं, सर्दी हो, बर्फ पड़ रही हो, जो सिख है वह फिर भी दर्शन करने को जायेगा। दशम गुरु साहब का वाकेया है। एक बार सत्संग में बैठे हुये कहीं जिक्र आ गया सोहनी का। कहा, “भई धन्न सोहनी!” कुर्बानी की तरफ नजर मार कर कहा। संगत ने कहा, “महाराज, यह आपने क्या कहा?” देखिये सत्संग में उसका ख्याल। कहने लगे, “बहुत अच्छा, कल सुबह दण्ड लगा लेना। रात को गिर्दा-गिर्द, किले में

ब्रा० १३२

रहते थे, चारों तरफ थी खाई, बारिश इतनी हुई, लोग सुबह तीन-चार बजे आते थे। इतनी बारिश हुई कि वह खाई भर गई और किले के दरमियान पानी ही पानी हो गया। अब सुबह को एक आध आदमी आया, बाकी कोई नहीं आया, दिन चढ़े आये जब बारिश खत्म हो गई। तो कहने लगे (गुरु साहब), देखो भई, यहां तो बारिश थी न, किले की खाई पानी से भरी थी, मौत का तो कोई सामान नहीं था, तैर कर आ सकते थे, तुम नहीं आये। सोहनी ने यह देखा, यह कच्चा घड़ा है, मौत मेरे सामने है कदम-कदम पर, फिर भी परवाह न की। तुमसे तो अच्छी थी कि नहीं।" जज्बे की बात सुनाई। तो कहते हैं कक्षर हो, पाला पड़ रहा हो, बर्फ पड़ रही हो, सर्दी हो सख्त, फिर भी सिख जो है, वह तो हर सूरत दर्शन करने को ज्याग। किस लिये, कि वह पोल है जिसको वह पाना चाहता है वह उसमें इजहार कर रहा है। उसके पास जाने से हमें वह ऐसा बनाता है जिससे हम उसके देखने वाले हो जायें, बात तो यह है। बाहर कोई मुश्किल हुई तो कहते हैं कि आज हमारा बच्चा बीमार है, हम नहीं आ सके, कल यह था। भाई लगन अभी नहीं। अभी लगन तो दुनिया की है। बात तो यह है।

(30) सब दिवस रैण देखूँ गुर अपणा, विच अकर्खीं गुर पैर धराई॥

कहते हैं दिन रात उसी को देखने को जी चाहता है, अपनी आँखों में वही सूरत बस रही है। प्यार की निशानी है। जिसका प्यार हो उसकी सूरत आँखों में समायेगी, ध्यान में समायेगी। दिन रात हर वक्त उसकी याद आयेगी। गुरु रामदास जी साहब ने फ़रमाया कि कोई सिख अगर रात को सोते हुये गुरु की मीठी याद में सो जाता है, उस परमात्मा और गुरु की याद में और सुबह उसी याद में उठता है, कहते हैं हम उसके पाँव धोने को तैयार हैं। ऐसा इंसान दुनिया का बन्दा कहाँ है भई? गुरु God -man (प्रभु में अभेद है), अगर तुम Guru-man बन गये, उसका प्यार है दिल में तो-As you think so you become (जिसका चिन्तन करोगे उसका रूप बनोगे), उसका उभार है। उसकी रूह जाती है आसमानों पर, तुम्हारी रूह बेअख्तियार सफर करने लग जायेगी। यह कुदरती खासा (गुण) है।

(31) अनेक उपाव करी गुर कारण, गुर भावे सो थाये पाई॥

कहते हैं अनेकों उपाय कर लिये, जब तक गुर न मिले मेहनत सफल

नहीं होती। चीज कहीं है, उसे ढूँढो कहीं तो कैसे मिले-

वस्तु कहीं ढूँढे कहीं केहि विधि आवे हाथ।

कहे कबीर तब पाइये जो भेदी लीजे साथ॥

चीज तो कहीं है वह अदृष्ट और अगोचर है, हम इन्द्रियों के घाट पर उसको ढूँढ रहे हैं, कैसे पा सकेंगे। समझो! जो चीज जहां है वहीं मिलेगी न। जो राज्ञ (ब्रह्म) का वाकिफ है, जिसको यह पता है यह चीज कहां है, वह जानता है वह अदृष्ट और अगोचर है आपको अदृष्ट अगोचर बना सकता है। उतना ऊँचा जितना वह है। वह तुम्हें सूक्ष्म और अगम है। आपको भी पिण्ड, अण्ड से पार ले जा सकता है। उसका नाम गुरु है। वह मिलेगा तो क्या करेगा?

सत्यरु लिया साथ कर दीनी वस्तु लखाय।

कोटि जन्म का पन्थ था पल में पहुंचा जाय॥

करोड़ों जन्मों से हम प्रभु से दूर बैठे हैं, मन इन्द्रियों के घाट पर। वह बिठाता है तुमको, इन्द्रियों के घाट से ऊपर पल में ले आता है और आँख खोल देता है, आसानी से काम बन जाता है।

(32) रैण दिनस गुर चरण अराधी, दया करो मेरे साई॥

कहते हैं हे मालिक, हे परमात्मा। आप दया करो ताकि दिन तार जिसमें तू प्रकट है उसी की याद बसे। उसके याद तेरी याद है। उसके अन्तर हम तुझही को ध्या रहे हैं। तो कहते हैं, हमाप्से यही दान मांगते हैं-

(33) नानक का जिउ पिण्ड गुरु है, गुर मिल तृप्त अधाई॥

कहते हैं मेरा जीव और प्राण गुरु ही है। मेरा जीवन आधार वही है। उससे क्या मिलता है। कहते हैं मन को तृप्ति मिलती है। उसको देखकर ठण्डक आती है, शान्ति मिलती है, टिकाव मिलता है, सब दुख भूल जाते हैं। आखिर कुछ चीज मिलती है। भई जैसे मैंने अभी अर्ज़ किया न, बर्फ के साथ लगकर जो हवा आयेगी वह ठण्डक देगी। जिसमें ठण्डक का सोमा (सूत) है, अवश्य उसके मडंल में बैठने से, देखने से, बातें करने से चार्झिंग होगी, ठण्डक मिलेगी, शान्ति मिलेगी। हमारे हजूर (बाबा सावन सिंह जी महाराज) थे। फरमाया करते थे, आज चरपाई टूट गई, बुलाओ तरखान को, आज कुर्सी टूट गई, बुलाओ तरखान को, आज दरवाजा टूट गया, बुलाओ तरखान को। क्या अच्छा हो कि तरखान को घर ही में ला रखो। मतलब यह कि गुरु अन्तर

में प्रकट हो जाये, बातें करने लगे। अरे भई हर वर्त का साथी मिल जाता है -
दिल के आईने में है तसवीरे यार जब ज़रा गरदन झुकाई देख ली।

सिख सच्चे मायनों में तब ही सिख बनता है जब गुरु अन्तर में प्रकट हो जाता है। जब तक गुरु अंतर गुरु प्रकट ही नहीं तो अभी Probationer (उम्मीदवार) है। जब तक अन्तर में प्रकट न हो तब तक सिख, सिख नहीं बनता। वह (गुरु) भी जिस्म नहीं, तुम भी जिस्म नहीं। वह कहता है छोड़ो पिण्ड और चलो ऊपर। बाहरी लिहाज से भी वह सादाचार सिखलाता है। वह दुनिया को नहीं बिगड़ाता है, दुनिया की मर्यादा को कायम रखता हुआ वह क्या कहता है? भई यह दुनिया का सुहाग है जिस्मानी, इसको बरकरार रखो, समझो! हर एक धर्म की मर्यादा में रहो और साथ ही साथ आत्म-सुहाग को पाओ। चाहे मर्द को चाहे स्त्री, वे दुनिया की जो रीति-रिवाज हैं, जो तरीका है धर्म आचार का या Social (सामाजिक) उसको बिगड़ता नहीं। समझो! अनुभवी पुरुष कहता है, जिस्मानी तौर पर अपनी मर्यादा पूरी रखो। तुम गृहस्थी हो, गृहस्थी यह समझो, स्त्री यह पति प्रभु ने मिलाया है, जीवन-यात्रा का एक संगी और साथी है, अंतिम स्वासों तक उसका साथ दें, दुख में, अमीरी में, हर हाल में। यह एक मर्यादा है। यह दुनिया का सुहाग है। पति यह समझे कि स्त्री मुझे प्रभु ने दी है, यही समझे मेरा जिस्म स्त्री के हवाले है। यह उसी का है। किसी और का नहीं है। स्त्री यही समझे मेरा जिस्म पति का है, किसी और का नहीं। यह भावना रखकर दुनिया की यात्रा सफल करें और उसके साथ-साथ अपनी आत्मा को प्रभु से जोड़े, आत्म सुहाग को पायें। वह कैसे मिल सकता है? एक ही तरीका है -

चारों कुट्टां जे भवे बिन, सतगुरु सुहाग न होई राम॥

चारों कुट्टों (दिशाओं) में अगर तुम फिर लो, बगैर सतगुरु के सुहाग नहीं मिला। समझो! सतगुरु तुमको आत्म-पद देता है, इन्द्रियों के घाट से ऊपर लाता है। आत्मा को प्रभु से संपर्क देता है। उसकी ज्योति के तुम देखने वाले होते हो। दिनों दिन बढ़ाओ।

(34) नानक का प्रभ पूर रहेओ है जत कत तत गुसाई॥

कहते हैं अब हम इस गति को पा गये हैं कि हर एक जगह परमात्मा ही परिपूर्ण नजर आता है।

एह विस संसार जो तू देखदा हर का रूप है हर रूप नदरी आया॥

गुरु कृपा से आया। गुरु के अन्तर भी मिलाने वाला वही (प्रभु) है। कहते हैं, उसके अन्तर हम तुझ ही को ध्या रहे हैं। तो इसलिये उसकी सोहबत संगत का दान मांग रहे हैं। बात तो इतनी है। यह गुरु रामदास जी साहब का शब्द है। सिख (शिष्य) की हैसियत (अवस्था) को बयान कर रहे हैं कि किस तरह ~~सेवह~~ मिल सकता है। कैसा हमको बनना चाहिये। कबीर साहब ने कहा कि सिख को अनुभवी पुरुष के रोज-रोज दर्शन, दिन में कई बातें, कई बार न हो तो दो बार, दो बार के बाद कहा एक बार हर रोज़, एक बार नहीं तो एक दिन छोड़कर, हफ्ते में दो बार, हफ्ते बाद, पन्द्रह दिन बाद, फिर महीने बाद, फिर तीन महीने बाद, फिर छह महीने बाद, फिर कहा साल तक अगर न करो तो उसका रास्ता बनता नहीं, मैलें चढ़ जाती हैं। अगर पाप में भी हो तो भी सोहबत संगत को न छोड़ो। फिर भी तुम्हें फिरने का सामान होगा, नहीं तो बहते-बहते कहां बह जाओगे।

हजूर (बाबू सावन सिंह जी महाराज) से मिलने एक बार एक आदमी आया अफ्रीका से, कहने लगा, "महाराज! कबीर साहब ने तो यह कहा, मुझे पाँच साल हो गये अफ्रीका गये हुए, आपके दर्शन नहीं हुये, तो बरस के बाद तो कबीर साहब ने यह कहा, अब यह मुआफी कैसे होगी?" तो हजूर कहने लगे, "भई यह कबीर साहब ने कहा, मैंने तो नहीं कहा न।" तो अनुभवी पुरुष की दया तो हमेशी ही शामिले हाल (साथ) रही है। ऊंधर रुचि होनी चाहिये। जब भी मुंह मोड़ोगे, ठण्डक मिलेगी। समझो! बात तो यह है। बाल्टर किलोल नाम एक सेंट बारबरा, अमेरिका में एक ने उपदेश लिया। अमेरिका की बात है ~~प्यां~~ से जब मैं अमेरिका गया वह बहुत सख्त बीमार था। उसको डॉक्टरों ने मजबूर किया कि तुम खाओ कुछ (मांस आदि)। उसको डॉक्टर ने कहा बहुत सख्त कमजोरी है, लाचारी है। कहने लगा, ये लोग Sincere (साफ़ दिल) बड़े होते हैं, कहने लगा कि मुझे अफसोस है, मैं नहीं कह सकता कि जिसमानी हालत इतनी कमजोर है, कि उसके सिवाय ~~डॉक्टर~~ और कुछ नहीं तजवीज करते। मैं मजबूर हूं। तुम मुझे माफ़ करते हुये वहां पहुंचा तो वह सख्त बीमार था। मन में बहुत शर्मिन्दा था। कहे किस मुँह से बुलाऊं में गया। मैंने कहा, मैं अब भी तुमसे वैसी ही प्रेम करता हूं॥

कहा, मैं
माया पिया
पर इलन
ओर सरब
दो गई जब
मैं चोरा

वह तो बखिशा का दरवाजा है भई। गिरे हुओं को उठाना उसका काम है। वह न उठाये तो और उठाने वाला कौन है?

असल बात तो यह है कि जो प्रभु के पुजारी हैं वे तो प्रभु को हर जगह देखते हैं। उनका प्यार सबसे है। उन महापुरुषों से जो पीछे आये, जिन्होंने प्रभु को पाया, जो धर्म स्थान हैं उनके लिये भी उनका प्यार है। वहां बैठकर प्रभु का गुणवाद गाते हैं। उनके दिल में तो सब तीर्थों के लिये भी इज्जत है कि वहां कोई न कोई महापुरुष रहा। जो अनुभवी पुरुष हैं वे यही कहते हैं, "तीर्थ बड़ों कि हरि को दास।" तीर्थ कैसे बने? हरि के दास के सबब से बने। वे तीर्थों को Denounce नहीं करते (निंदते नहीं)। ^प फरमात्मा कहां नहीं है? वह हर एक जगह है। जिसकी आँख खुली है वह हर जगह उसको देखता है। उसका इजहार कहां होता है? ^{हृदय} में, मनुष्य के अन्तर में।

२५५

◆◆◆◆◆